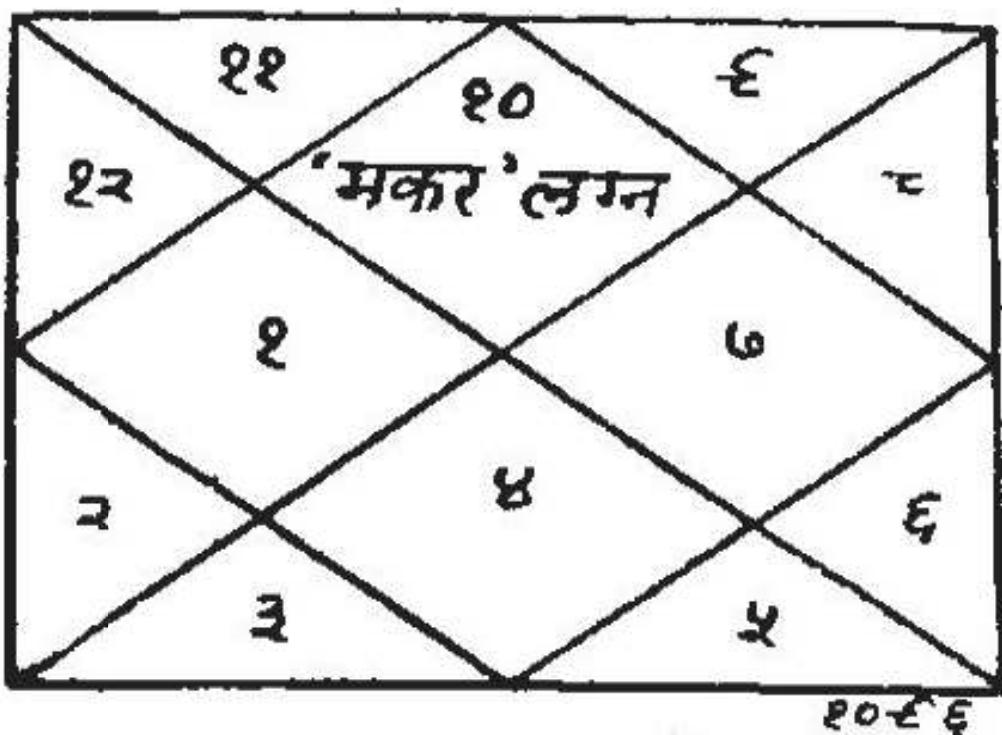


## ‘मकर’ लग्न



[‘मकर’ लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

### ‘मकर’ लग्न का फलादेश

‘मकर’ लग्न में जन्म लेने वाले जातक का शरीर लम्बा होता है। वह बड़ी-बड़ी औंखों वाला, उग्र स्वभाव का, निरन्तर युरुपार्य करने वाला, लोभी, चतुर, चंचक, ठग, पाखण्डी, आलसी, मनमौजी, तमोगुणी तथा कफ-वायु से पीड़ित रहने वाला होता है।

ऐसा व्यक्ति भीरु, सन्तोषी, खर्चीला, लज्जा-रहित, धर्म के विरुद्ध आचरण करने वाला, अधिक मन्त्रज्ञान, कवियों तथा स्त्रियों में आसक्त भी होता है।

‘मकर’ लग्न वाला जातक अपनी प्रारम्भिक अवस्था में सुख भोगता है, मध्यमावस्था में दुःख पाना है तथा ३२ वर्ष की आयु के बाद अन्तिम स्तर तक सुखी बना रहता है।

ऐसे व्यक्ति की आयु पूर्ण होती है तथा उसका भाग्योदय प्रायः ३२-३३ वर्ष की अवधि में होता है।



## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server!



## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server!

‘मकर’ लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित-विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डलियों में संख्या ३३४ से ४४१ के बीच देखना चाहिए।

गोचर कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे अगे लिखे अनुसार समझ सेना चाहिए।



### ‘मकर’ लग्न में ‘सूर्य’ का फलादेश

१—‘मकर’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘बुध’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०६७ से ११०८ के बीच देखना चाहिए।

२—‘मकर’ लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘सूर्य’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस अहीने में ‘सूर्य’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर स्थित हो तो संख्या १०६७
- (ख) ‘वृष’ राशि पर स्थित हो तो संख्या १०६८
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर स्थित हो तो संख्या १०६९
- (घ) ‘कक्ष’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११००
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०१
- (च) ‘कन्या’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०२
- (छ) ‘तुला’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०३
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०४
- (झ) ‘घनु’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०५
- (अ) ‘मकर’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०६
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०७
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०८

### ‘मकर’ लग्न में ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

१—‘मकर’ लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘चन्द्रमा’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०६ से ११२० के बीच देखना चाहिए।

२—‘मकर’ लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘बुध’

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'मङ्गल'

- (क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०९
- (ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११०
- (ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११११
- (घ) 'कक्ष' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११२
- (ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११३
- (च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११४
- (छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११५
- (झ) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११६
- (झ) 'घनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११७
- (अ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११८
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११९
- (ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२०

### 'मकर' से ग्रन्थ में 'मङ्गल' का फलादेश

१—'मङ्गल' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मङ्गल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११२१ से ११३२ के बीच देखना चाहिए।

२—'मङ्गल' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मङ्गल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'मङ्गल'

- (क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२१
- (ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२२
- (ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२३
- (घ) 'कक्ष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२४
- (ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२५
- (च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२६
- (छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२७
- (झ) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२८
- (झ) 'घनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२९
- (अ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११३०
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११३१
- (ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११३२

~~अंकुर~~ लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११३३ से ११४४ के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में बुध—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ११३३
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ११३४
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ११३५
- (ध) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ११३६
- (इ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ११३७
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ११३८
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ११३९
- (ज) 'बृशिंच' राशि पर हो तो संख्या ११४०
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ११४१
- (झा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ११४२
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ११४३
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ११४४

**'मकर' लग्न में 'गुरु' का फलादेश**

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११४५ से ११५६ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ११४५
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ११४६
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ११४७
- (ज) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ११४८
- (झ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ११४९
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ११५०

- (अ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ११५१
- (ब) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ११५२
- (ग) 'घनु' राशि पर हो तो संख्या ११५३
- (ज) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ११५४
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ११५५
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ११५६

### 'मकर' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न घावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११५७ से ११६८ के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों को शोचर-कुण्डली के विभिन्न घावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

- (क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११५७
- (ब) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११५८
- (ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११५९
- (ज) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६०
- (ट) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६१
- (च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६२
- (छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६३
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६४
- (ग) 'घनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६५
- (ज) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६६
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६७
- (ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६८

### 'मकर' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न घावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६९ से ११८० के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों को शोचर-कुण्डली विभिन्न घावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

- (क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६९

- (क) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७०
- (ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७१
- (घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७२
- (ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७३
- (च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७४
- (छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७५
- (झ) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७६
- (झ) 'घनु' राशि पर स्थित हो को संख्या ११७७
- (झ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७८
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७९
- (ठ) 'भीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८०

### **'मकर' लग्न में 'राहु' का फलादेश**

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न वालों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११८१ से ११८२ के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्षे में 'राहु'—

- (क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८१
- (ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८२
- (ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८३
- (घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८४
- (ঙ) 'সিংহ' রাশি পর স্থিত হো তো সংখ্যা ১১৮৫
- (চ) 'কন্যা' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८६
- (ছ) 'তুলা' राशि पर स्थित हो तो संख्यা ११८७
- (ঝ) 'বৃশ্চিক' রাশি পর স্থিত হো তো সংখ্যা ১১৮৮
- (ঝ) 'ঘনু' রাশি পর স্থিত হো তো সংখ্যা ১১৮৯
- (ঝ) 'মকর' রাশি পর স্থিত হো তো সংখ্যা ১১৯০
- (ট) 'কুম্ভ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९१
- (ঠ) 'ভীন' রাশি পর স্থিত হো তো সংখ্যা ১১৯২

‘मकर’ लग्न में ‘केतु’ का फलादेश

१—‘मकर’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न घारों में स्थित ‘केतु’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६३ से १२०४ के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' सम्बन्धी वालों को शोधर-कुण्डली के विभिन्न आवर्णों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निष्पत्तिकृत उदाहरण-कृष्णलियों में देखना चाहिए—

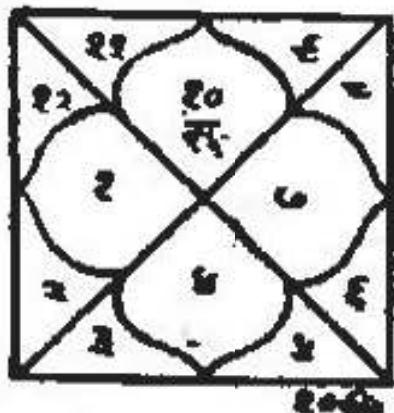
जिस वर्ष में 'केत'—

- (क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६३  
 (ख) 'बुध' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६४  
 (ज) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६५  
 (ध) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६६  
 (क) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६७  
 (ख) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६८  
 (छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६९  
 (ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या १२००  
 (झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या १२०१  
 (ञ) 'भूकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या १२०२  
 (ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या १२०३  
 (ठ) 'मोन' राशि पर स्थित हो तो संख्या १२०४

‘मकर’ सरन में ‘सूर्य’

‘भक्त’ लग्न की कृष्णली के ‘प्रभेभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फरारैन

महाराष्ट्रः प्रथमभावः सूर्य

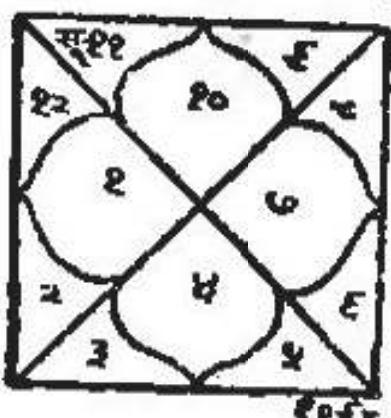


पहुँसे भांव में जादू 'लनि' को राति पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के सारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है। तथा कमी-कमी दिल्लेष सारीरिक कष्टों का समाना भी करना पड़ता है। परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व को बढ़ाव देती है।

सातवीं शिवदृष्टि से सप्तममात्र को देखने से स्त्री के पक्ष में सामान्य कठिनाई रहती है तथा इनिह अधिकार्य में भी कुछ परेशानियाँ आती रहती हैं।

‘मुकार’ लदन की बुज्जहलो के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का चलाईगा

मकर लग्नः द्वितीयमासः सुवृ

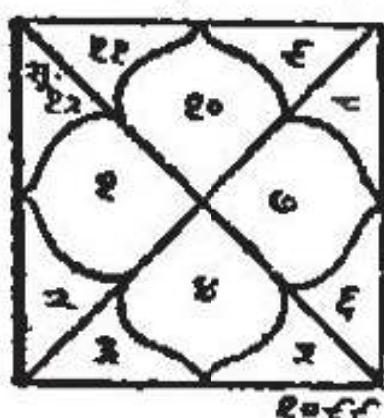


दूसरे भाव में शब्द 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से ज्ञातक घन का संचय नहीं कर पाता। तथा क्रूटम्ब के सुब में भी संकट आते रहते हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमशब्द को देखने से आधु को वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का साम होता है। ऐसा व्यक्ति अमीरी ढंग का जीवन बिताता तथा शान-शौकत में खर्च करता रहता है।

‘भक्त’ लम्ह को कृष्णसो के ‘त्रितीयसाक्ष’ स्थित ‘सुर्य’ का चलादेता

मकरस्तम्भः सतीयभावः सूर्य

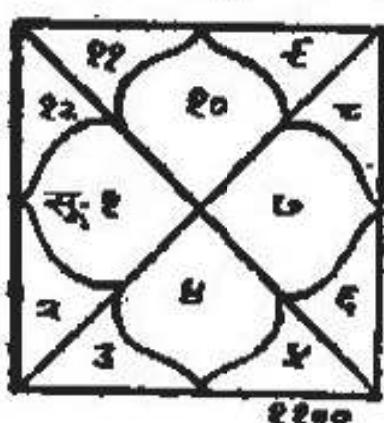


तीसरे भाव में यिन 'गुह' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कभी आती है। अथवा पूरातत्त्व की शक्ति का साम्र होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति में कुछ रुकावटें आती हैं तथा धर्म के पश्च में भी कमी बनी रहती है।

‘अहर’ लम्ह को लकड़ी के ‘चतुर्भूमाय’ स्थित ‘सूर्य’ का छलादेश

मुक्तर शर्मा : चतुर्थभाव : सुमं

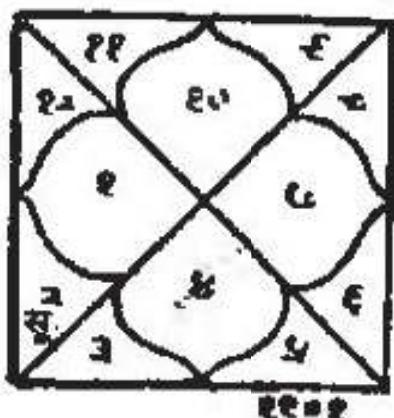


चीजे भाव में मिल 'मंगल' की राशि पर स्थित उच्च के 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का शेष सुख प्राप्त होता है। आयु तथा पुरातत्व का भी साम होता है। 'दैनिक जीवन अमीरी ढंग का रहता है।

सातवीं बीच-दृष्टि से दम्भभाव को देखने से पिता से सुख में कभी आती है तथा राज्य एवं व्यवसाय की उन्नति में रुकावटें आती हैं।

### 'मकर' लग्न की कृष्णली के 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकरलग्नः पंचमभावः सूर्य

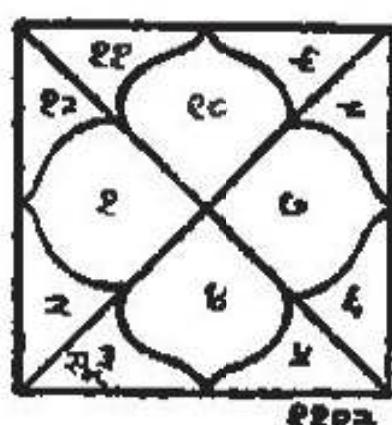


पाँचवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्युद्ययन में कठिनाई रहती है। बुद्धि भी कमजोर रहती है। ऐसा अविकृत चिन्तातुर तथा स्वभाव का कोष्ठी होता है। उसे आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है।

सातवीं मिन्न-दृष्टि से एकादशभाव तो देखने से लाभ-प्राप्ति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तभी सफलताँ मिन्न पाती है।

### 'मकर' लग्न की कृष्णली के 'षष्ठ्यभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकरलग्नः षष्ठ्यभावः सूर्य

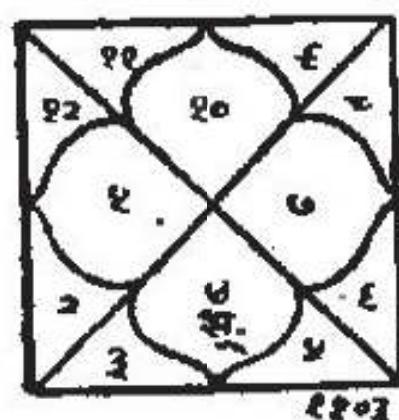


छठे भाव में मिन्न 'बुध' को राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर हमेशा विजय प्राप्त करता है। आयु तथा पुरातत्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मिन्न-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में असन्तोष भी रहता है।

### 'मकर' लग्न की कृष्णली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकरलग्नः सप्तमभावः सूर्य

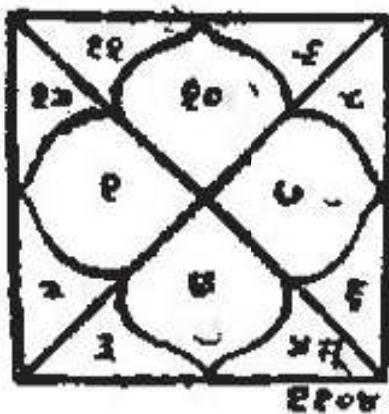


सातवें भाव में मिन्न चन्द्रमा को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा कभी-कभी बहुत हानि भी उठानी पड़ती है। आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है।

सातवीं एकू-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से सारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है तथा कभी-कभी जिकार भी बनना पड़ता है।

## ‘अकर’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

यकरलग्न : अष्टमभाव : सूर्य

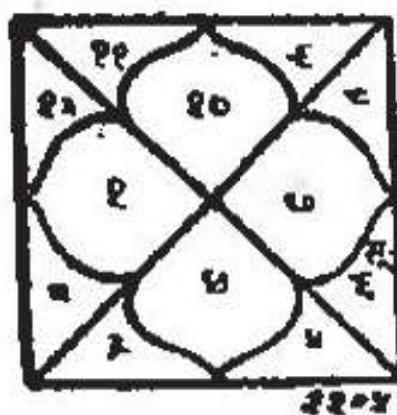


बाठवें भाव में स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक सो आयु तथा पुरातत्त्व की विकेष शक्ति प्राप्त होता है। वह बड़ा स्वामिनी, लेखस्वी, निहर तथा बहादुर होता है। उसका दैनिक जीवन भी बड़ा प्रशांत-पूर्ण रहता है।

सातवीं जलू-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से जन संचय में परेशानी रहती है तथा कौटुम्बिक सुख में बाधाएँ आती हैं।

## ‘अकर’ लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

यकरलग्न : नवमभाव : सूर्य

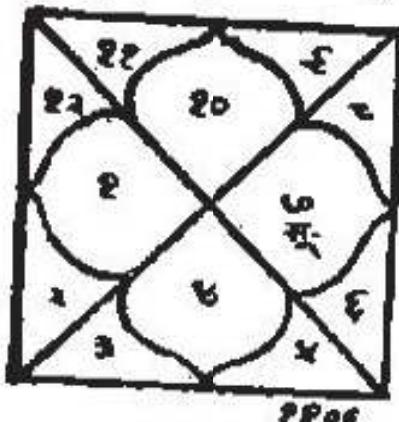


नवें भाव में पित्र ‘बुध’ को राशि पर स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक को आग्नोल्लासि कुछ रुकावटों के साथ होती है। छर्म-शात्रन में भी दोहरी वृद्धि रहती है तथा मज्ज में भी कमी आती है। आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। जिससे जातक रहसी ढंग का जीवन असीत करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम की समुचित वृद्धि नहीं हो पाती।

## ‘अकर’ लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

यकरलग्न : दशमभाव : सूर्य



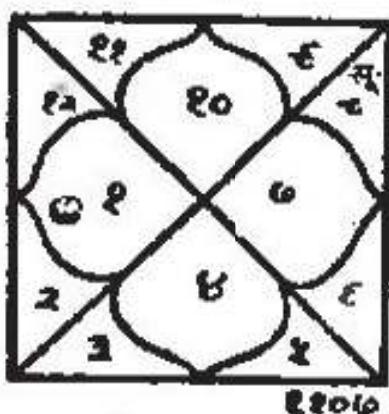
इसवें भाव में जलू ‘कुक’ को तुला राशि पर स्थित वीच के ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक को पिता पक्ष से चोर कष्ट उठाना पड़ता है। राज्य पक्ष से वित्ति में कमी तथा व्यवसाय-पक्ष में बाधाओं का का सामना करना पड़ता है। आयु तथा पुरातत्त्व तो शक्ति को भी कुछ हानि होती है।

सातवीं जिस तथा उच्च-दृष्टि से चतुर्थभाव

को देखने से याता, श्रुति तथा ज्ञान का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

### 'अकर' लग्न की कुण्डली के 'दृक्षारसभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

अकरलग्न : एकादशभाव : सूर्य

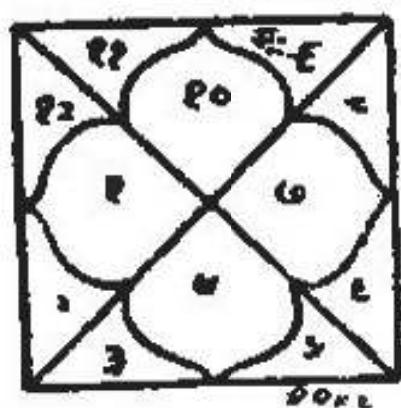


व्याख्याहके भाव में मिल 'बंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है, परन्तु कभी-कभी कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। बायु तथा पुरातत्त्व की क्षमिता का विशेष लाभ होता है।

सातवीं शत्रु-दूष्ट से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से कष्ट रहता है तथा विद्याव्ययन के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसा अविक्षित उग्र स्वभाव का होता है।

### 'अकर' लग्न की कुण्डली के 'दृक्षारसभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

अकरलग्न : द्वादशभाव : सूर्य



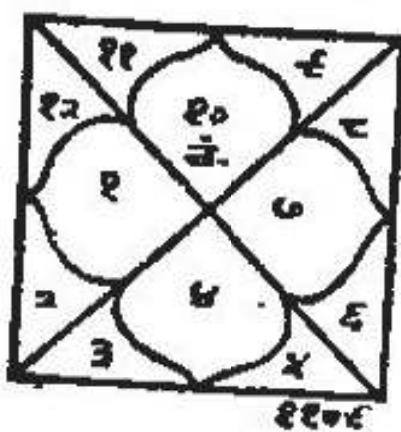
व्याख्याहके भाव में मिल 'शुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को खर्च तथा बाहरी सम्बन्धों में कठिनाई उपस्थित होती है। पेट में विकार भी रहता है। बायु तथा पुरातत्त्व की भी कुछ हानि होती है।

सातवीं शत्रु-दूष्ट से पंचमभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है तथा अग्रके-टंटे स्वयं ही दूर होते रहते हैं।

### 'अकर' लग्न में 'चन्द्रमा'

#### 'अकर' लग्न की कुण्डली के 'अधमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

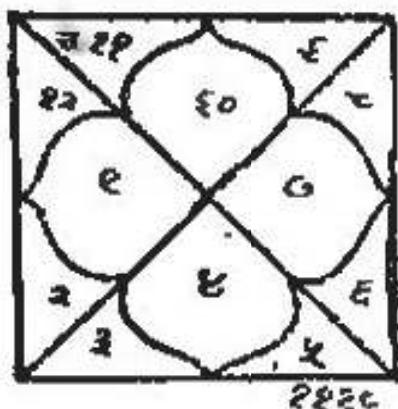
अकरलग्न : अधमभाव : चन्द्र



पहले भाव में शत्रु 'हानि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के ज्ञातरीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है। वह विनोदी, मानी, यशस्वी तथा कार्य-कुशल भी होता है।

सातवीं दूष्ट से स्वराजि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री सुन्दर, सुयोग्य तथा स्वाभिमानिनी मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी पूर्ण सफलता मिलती है।

**'महर'** सम्म की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश  
मकरस्त्र : द्वितीयभाव : चंद्र

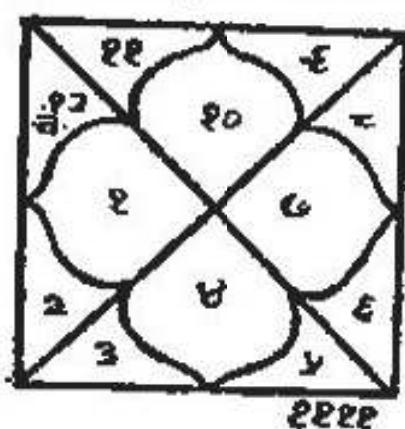


दूसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव के जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है, परन्तु स्त्री के कारण कुछ परेशानी का अनुभव भी होता है।

सातवीं मित्रदूष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्व की शक्ति में वृद्धि होती है। ऐसे व्यक्ति का रहन-सहन अमीरी ढंग का होता है।

**'महर'** सम्म की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकरस्त्र : तृतीयभाव : चंद्र

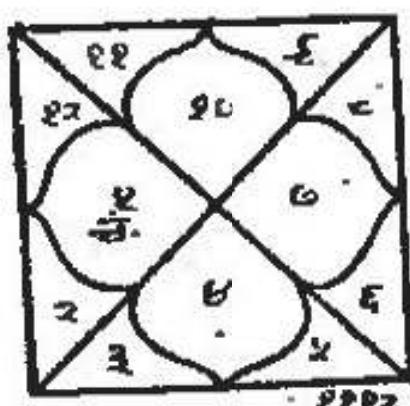


तीसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की भाई-बहिनों का श्रेष्ठ सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। स्त्री, व्यवसाय तथा कुटुम्ब का सुख भी अच्छा रहता है।

सातवीं मित्रदूष्टि से नवमभाव को देखने से आयु तथा धर्म की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, वशस्त्री, सुखी तथा सम्पन्न होता है।

**'महर'** सम्म की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकरस्त्र : चतुर्थभाव : चंद्र

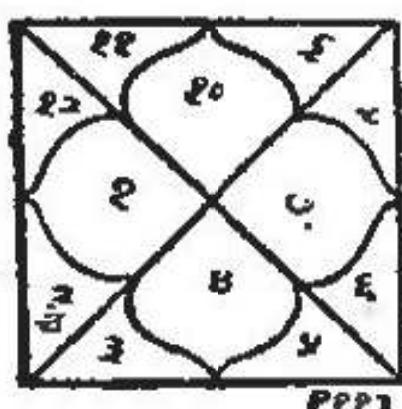


चौथे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को यात्रा, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। घरेलू वातावरण लोनन्दमय रहता है। स्त्री सुन्दर मिलती है, व्यवसाय में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदूष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा स्थायी व्यवसाय के क्षेत्र में यश, प्रतिष्ठा, सहयोग, धन तथा अन्य साध प्राप्त होते रहते हैं।

‘अकर’ लग्न को कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

अकर लग्नः पंचमभावः चंद्र

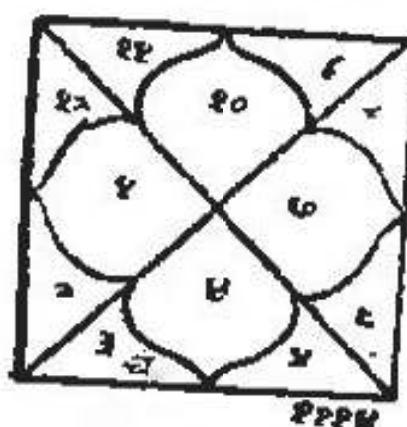


पाँचवें भाव में सामान्य गिरि ‘बुध’ की राशि पर स्थित उच्च के ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव में जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष से भी सुख मिलता है।

सातवीं नीचदृष्टि से एकादशभाव की देखने से आमदनी के भाग में कुछ रुकावटें आती हैं। ऐसा व्यक्ति हँसमुख तथा हाथिरजवाम भी होता है।

‘अकर’ लग्न की कुण्डली के ‘षष्ठभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

अकर लग्नः षष्ठभावः चंद्र

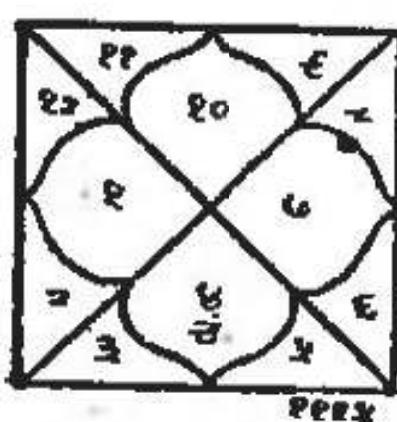


छठे भाव में गिरि ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक शाक-पक्ष में विनाशता से काम निकालता है। स्त्री से विरोध तथा व्यवसाय में कठिनाई का सामना भी करना पड़ता है।

सातवीं गिरि-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से जर्जर अविक रहता है, परन्तु बाहरी म्यानों के सम्बन्ध से साथ भी मिलता रहता है।

‘अकर’ लग्न की कुण्डली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

अकर लग्नः सप्तमभावः चंद्र

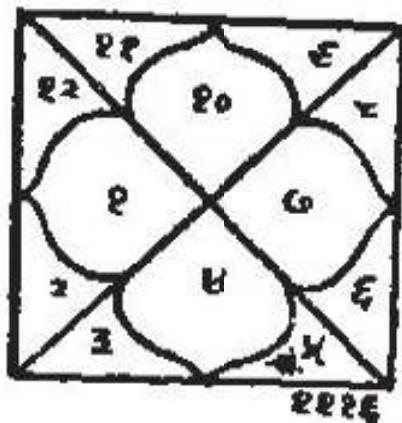


सातवें भाव में स्वराशि में स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री तथा उसके द्वारा यथेष्ट सुख की प्राप्ति होती है। व्यवसाय में भी पूर्ण सफलता मिलती है। घरेलू जीवन आनन्दमय बना रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव की देखने से लारीरिक प्रभाव में कुछ असंतोषमूणे बृद्धि होती है। यक्ष तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी असंतोष बना रहता है।

## 'मकर' राशि की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलानेश

मकर संग्रह : अष्टमभाव : चंद्र

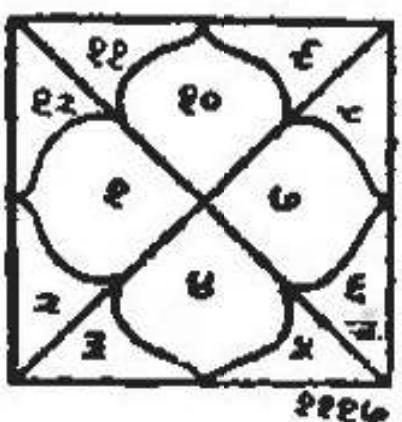


आठवें भाव में मिल 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का यशेष्ट लाभ होता है, परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। गृहस्थी का सुख भी कम रहता है। मन में व्याकुलता रहती है।

सातवीं शतांशूदूष्टि से द्वितीयभाव की देखने से घन तथा कुटुम्ब का सुख कुछ कठिनाइयों के साथ प्राप्त होता है। वैसे दैनिक जीवन ठाठ-बाट का रहता है।

## 'मकर' राशि की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलानेश

मकर संग्रह : नवमभाव : चंद्र

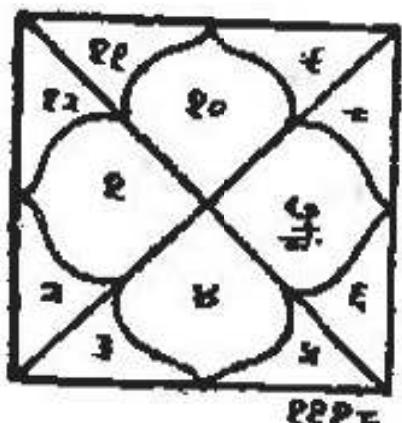


नवें भाव में मिल 'कुम्ह' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के आग्ने की विशेष उन्नति होती है तथा धर्म में भी अत्यधिक रुचि बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति धनी, यशस्वी, म्यायी तथा उमर्त्त्वा होता है।

सातवीं शतांशूदूष्टि से तृतीयभाव को देखने से आई-बहिनों से सुख तथा पराक्रम में बूढ़ि होती है।

## 'मकर' राशि की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलानेश

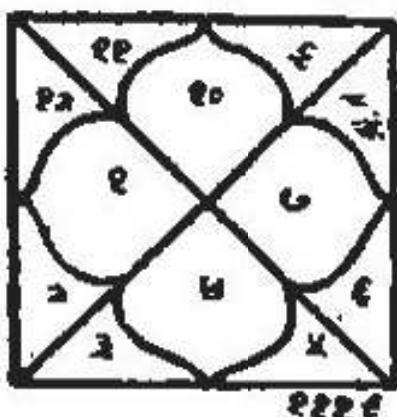
मकर संग्रह : दशमभाव : चंद्र



दसवें भाव में सामान्य मिल 'कुक' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा सहयोग, राज्य से प्रतिष्ठा तथा व्यवसाय से साम की प्राप्ति होती है। मनोवैज्ञानिकी मिलती है। घरेलू जीवन उल्लासपूर्ण रहता है।

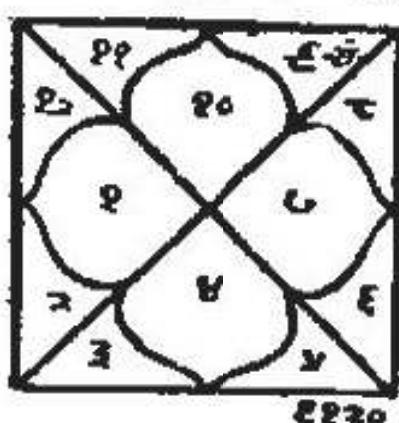
सातवीं शतांशूदूष्टि से चतुर्थभाव की देखने से जाता, भूमि तथा अवन का सुख भी यशेष्ट मिलता है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी तथा भाग्यशाली होता है।

**'मकर' राशि की कुष्ठसी के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश**  
**मकर संग्रह : एकादशभाव : चंद्र**



**'मकर' राशि की कुष्ठसी के 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश**

**मकर संग्रह : द्वादशभाव : चंद्र**

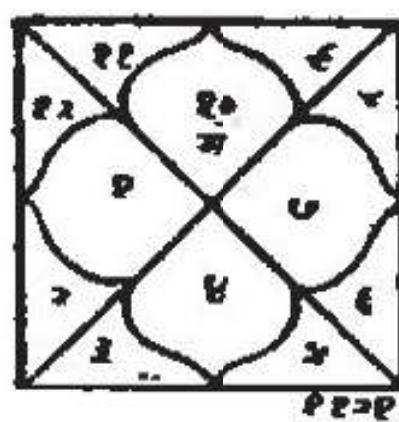


काम निष्कालकर अपना प्रभाव भी स्थापित करता है।

### 'मकर' राशि में 'भूगल'

**'मकर' राशि की कुष्ठसी के 'प्रथमभाव' स्थित 'भूगल' का फलादेश**

**मकर संग्रह : प्रथमभाव : भूगल**



व्याख्यात हैं भाव में मिल 'भूगल' की राशि पर स्थित नीच के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की आमदनी में कुछ कमी रहती है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अल्प सुख मिलता है। गृहस्थी के कारण चिताओं का शिकार बनना पड़ता है।

सातवीं उच्च-दूषित से पंचमभाव की देखने से विदा, बुद्धि तथा तथा सम्मान का बयेट सुख प्राप्त होता है।

**'मकर' राशि में 'भूगल'**

बारहवें भाव में मिल 'भूर' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से साम होता रहता है। स्त्री-सुख में कमी रहती है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं। इसी से मन चित्तित तथा बमान्त बना रहता है।

सातवीं मिलदूषित से षष्ठमभाव को देखने से शत्रु-पक्ष एवं जागड़े के मामलों में जातक विनाशक से काम निष्कालकर अपना प्रभाव भी स्थापित करता है।

### 'मकर' राशि में 'शनि'

**'मकर' राशि की कुष्ठसी के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश**

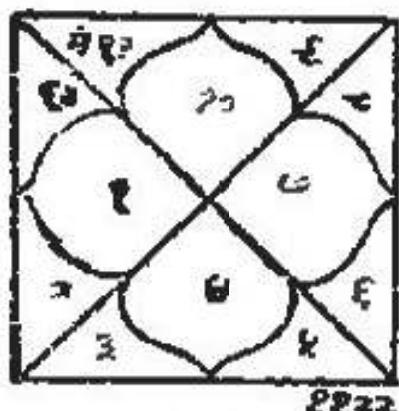
**मकर संग्रह : द्वितीयभाव : शनि**

पहले भाव में मिल 'शनि' की राशि पर स्थित उल्लंघन के 'भूगल' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्थित में बुद्धि होती है। चौथी दूषित से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं अवन का अज्ञात सुख प्राप्त होता है। रहन-सहन ठाठ-बाट का होता है।

सातवीं नीच-दूषित से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं मिल-दूषित से अष्टमभाव को देखने से आग्रु तथा पुरातत्व की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, दनी तथा चतुर होता है।

### 'मकर' सम्बन्धी कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

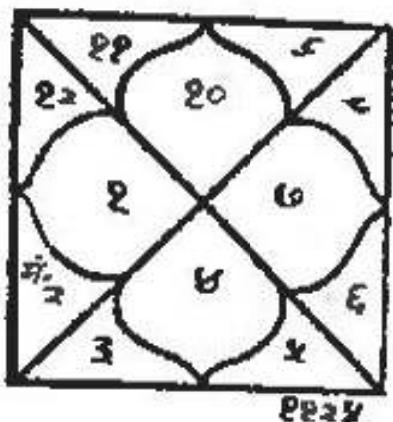
मकर लग्नः द्वितीयभावः मंगल



दूसरे भाव में शत्रु 'शनि' को राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को मन-कुटुम्ब का पर्याप्त सुख सामान्य असंतोष के साथ प्राप्त होता है, परन्तु माता के सुख में कमी रहती है। भूमि एवं भवन का लाभ होता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष की उन्नति होती है। सातवीं मिल-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्व की शक्ति बढ़ती है।

### 'मकर' स्थन की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकरस्थन : पंचमभाव : मंगल

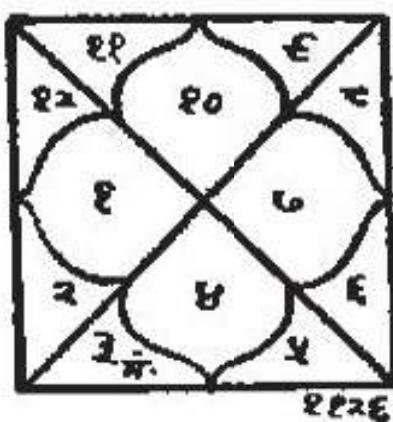


पाँचवें भाव में सामान्य मिळ 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को विद्या-वृद्धि तथा सन्तान-सुख का लाभ होता है। माता, भूमि तथा घरन का सुख भी मिलता है। चौथी मिळ-दूषित से व्यष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की अक्षित में वृद्धि होती है।

सातवीं दूषित से त्वराशि में एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है। सातवीं मिळ-दूषित से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा वाहरी सम्बन्धों से लाभ प्राप्त होता है।

### 'मकर' स्थन की कुण्डली के 'षष्ठमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकरस्थन : षष्ठमभाव : मंगल

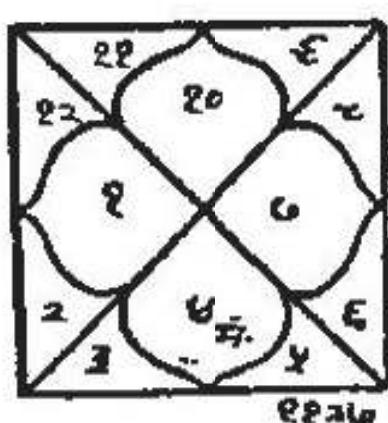


छठे भाव में मिळ 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक सद्गुण क पर विशेष प्रभाव रहता है तथा झगड़ों से लाभ उठाता है। माता, भूमि तथा घरन वे सुख में कमी आती है तथा आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती रहती हैं। चौथी मिळ-दूषित से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है।

सातवीं मिळ-दूषित के द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा वाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। आठवीं उच्च दूषित से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य स्वास्थ्य, एवं प्रभाव में वृद्धि होती है।

### 'मकर' स्थन की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकरस्थन : सप्तमभाव : मंगल



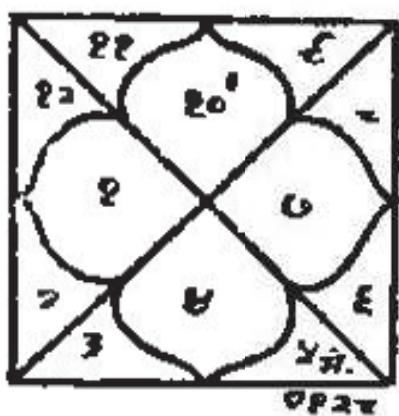
सातवें भाव में मिळ 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित नीच के 'मंगल' के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष-तथा गृहस्थी के सुख में कमी रहती है। व्यवसाय माता, भूमि तथा घरन का सुख भी कमजोर रहता है। चौथी सद्गु-दूषित से दशमभाव को देखने से पिता, शृज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है।

सातवीं उच्च-दूषित से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव एवं गौरव की वृद्धि होती है। आठवीं शाद्गु-दूषित से तृतीयभाव को देखने से धन-संचय व उत्तम काम का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

में कठिनाइयाँ आती हैं तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

### 'मकर' राशि की कुण्डली के 'ज्येष्ठमध्याव' स्थित 'अंगल' का फलावेत

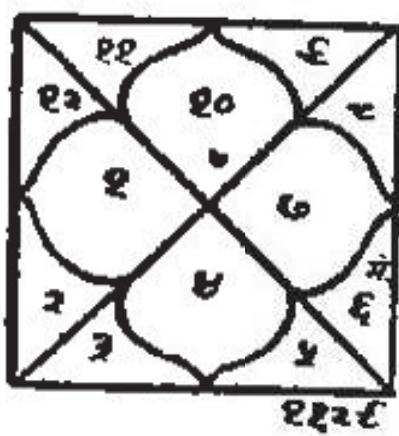
मकरलग्नः ज्येष्ठमध्यावः अंगल



देखने से शाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में बृद्धि होती है।

### 'मकर' राशि की कुण्डली के 'ज्येष्ठमध्याव' स्थित 'अंगल' का फलावेत

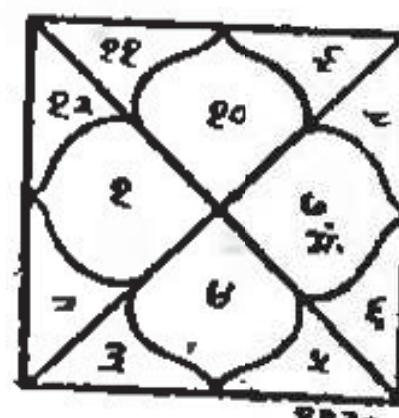
मकरलग्नः मवमध्यावः अंगल



माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। सुखों, पराक्रमी तथा विनोदी होता है।

### 'मकर' राशि की कुण्डली के 'दशमध्याव' स्थित 'अंगल' का फलावेत

मकरलग्नः दशमध्यावः अंगल



आठवें भाव में मिल 'सूर्य' की राजि पर स्थित 'अंगल' के धनाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व की यथेष्ट अक्षित प्राप्त होती है, परन्तु माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कुर्बान रहता है। चौथी दृष्टि से स्वराजि में एकादशभाव की देखने से आमदनी बहुत बच्ची रहती है। सातवीं जन्म-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से कुछ कमियों के साथ धन-संचय में सफलता मिलती है तथा कुटुम्ब का सुख सामान्य रहता है। आठवीं मिल-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से शाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में बृद्धि होती है।

नवें भाव में मिल 'कुञ्ज' की राजि पर स्थित 'अंगल' के प्रभाव से जातक के सामग्री तथा धर्म की उन्नति होती है। वह धनी, यशस्वी, धर्मात्मा तथा न्यायप्रिय होता है। चौथी मिल-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से तृतीयभाव की देखने से शाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में बृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराजि में चतुर्थभाव को देखने से

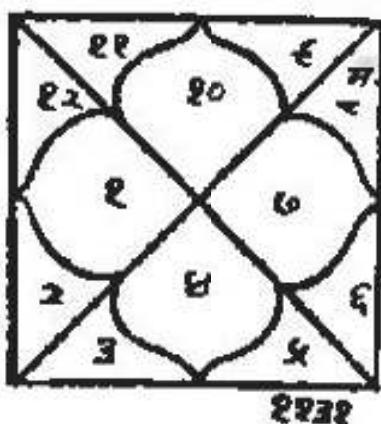
माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। ऐसा अक्षित धनी, यशस्वी, सुखी, पराक्रमी तथा विनोदी होता है।

दसवें भाव में सामान्य शब्द 'सुक' की राजि पर स्थित 'अंगल' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। चौथी जन्म-दृष्टि से प्रथमभाव की देखने के आरोरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभाव में बृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराजि में चतुर्थभाव की देखने के याता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। आठवीं सामान्य मिल-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सत्सान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि की बृद्धि होती है।

**'मकर'** लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

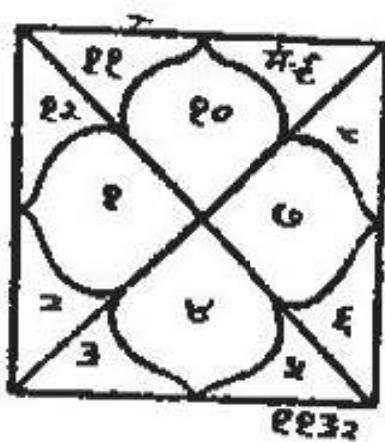
मकरलग्न : एकादशभाव : मंगल



पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रहता है तथा ज्ञागङ्गों से लाभ होता है।

**'मकर'** लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : मंगल

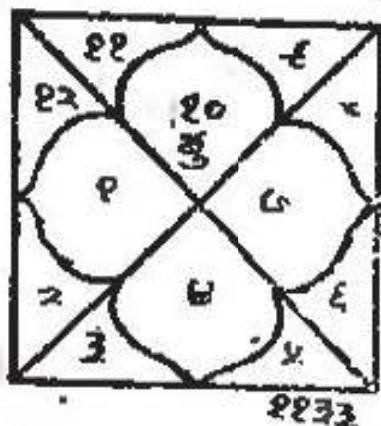


है तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है।

### 'मकर' लग्न में 'बुध'

**'मकर'** लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : प्रथमभाव : बुध



२१३३

ग्यारहवें माह में स्वराशि-स्थित 'बंगल' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती होती है। माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख भी प्राप्त होता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव की देखने से धन और कुटुम्ब का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि तथा सन्तान का शेष सुख मिलता है। बाठवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-

पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रहता है तथा ज्ञागङ्गों से लाभ होता है।

**'मकर'** लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

बारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर

स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। चौथी मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव की देखने से भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम ये वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठमभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। बाठवीं नीच-दृष्टि से सप्तम भाव की देखने से स्त्री के सुख में कुछ कमी आती है तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है।

### 'मकर' लग्न में 'बुध'

**'मकर'** लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

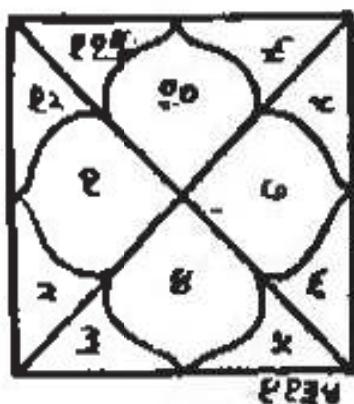
मकरलग्न : प्रथमभाव : बुध

पहले भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। वह शत्रु-पक्ष पर स्वविवेक से प्रभाव स्थापित करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है, परन्तु व्यवसाय में कभी-कभी कठिनाइयाँ भी आती हैं।

### 'मकर' लग्न की शुभदली के 'त्रितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्नः त्रितीयभावः बुध

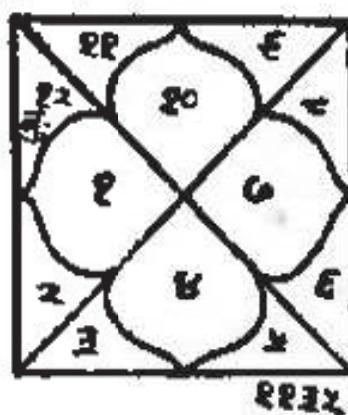


दूसरे भाव में यित्र 'शनि' को राशि पर स्थित 'बुध' से प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख की बुद्धि होती है। भान, प्रतिष्ठा तथा धर्म में दशि भी रहती है।

सातवीं भित्ति-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आपु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। परन्तु कभी-कभी आग्योन्नति में कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं।

### 'मकर' लग्न की शुभदली के 'त्रितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्नः त्रितीयभावः बुध

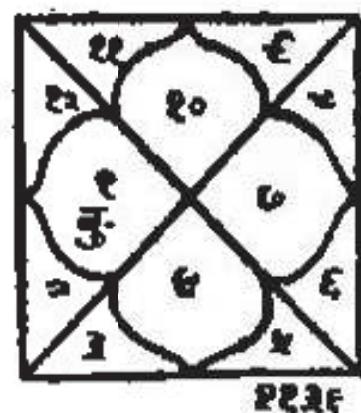


तीसरे भाव में यित्र 'शुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को शाई-बहिन के बुध तथा पराक्रम में कुछ कमी का अनुभव होता है। आग्योन्नति तथा धर्म-पालन में भी कठिनाइयाँ आती हैं। शहू पक्ष से भी कुछ परेशानी होती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से स्वराशि में मध्यभाव की देखने से स्वविवेक-बुद्धि द्वारा आग्य तथा धर्म की उन्नति होती रहती है।

### 'मकर' लग्न की शुभदली से 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्नः चतुर्थभावः बुध

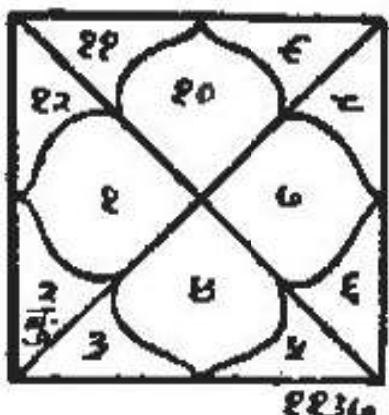


चौथे भाव में यित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की माला, भूमि तथा भवन का बुध आप्त होता है तथा आय की भी उन्नति होती है। घरेलू बुध-शान्ति में कुछ विघ्न आते हैं।

सातवीं भित्ति-दृष्टि से दक्षमध्यभाव को देखने से यित्र, राज्य एवं व्यवसाय के लोक में सफलता यित्ती है तथा सदू-यज्ञ में विजय प्राप्त होती है।

‘अकर’ समूह की बूजली के “पंचमाय” स्थित ‘बुज’ का फलावेश

## मकरलग्नः पञ्चमभावः ब्रूप्त

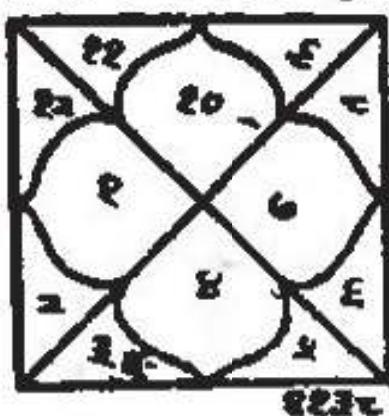


पौद्वे भाष में मित्र 'कुक' की राशि पर स्थित 'कुध' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान, विद्या सद्या बुद्धि के शेन में सफलता प्राप्त होती है। वह स्वपरिश्रम से आमदनी तथा धर्म की उन्नति भी करता है। शत्रु-पक्ष में नी सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आगे की शक्ति में धर्मेष्ट बृद्धि होती है।

‘यकर’ सामन की बुज्जती के ‘बछड़माल’ स्थित ‘बघ’ का फलादेश

मंकरलग्नः षष्ठमावः श्रूध

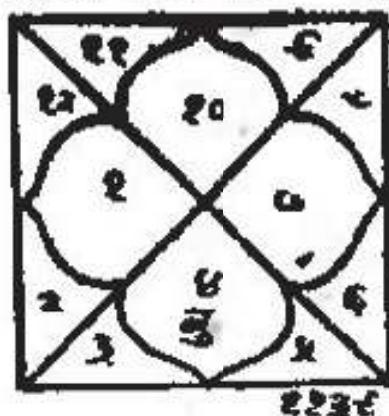


छठे भाव में स्वराशि में स्थित 'कुध' के प्रभाव से जातक को शकु-पङ्क पर विषय प्राप्त होती है। भाग्य सदा धर्म की उन्नति में कुछ कठिनाइयाँ हो जाती हैं, परन्तु बाद में वे दूर भी हो जाती हैं।

सातवीं मिक्रो-टेली से द्वादशवार्ष की बैखने से  
खर्च अधिक रहता है तथा आहरी स्थानों के सम्बन्ध से  
लाभ तथा सुख भी मिलता रहता है।

‘बुकर’ समूह की लाइटलो के ‘हायटम्यूनिवर्स’ स्थित ‘बुद्ध’-का फलावेश

मकारलग्नः सप्तमधावः शुभ

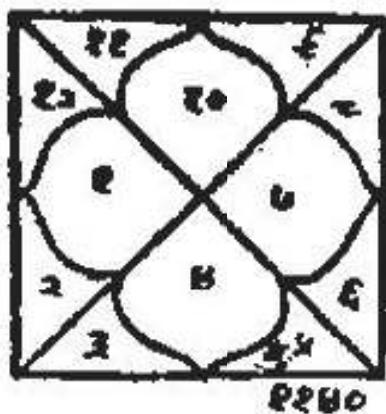


सातवें भाव में शब्द 'चम्द्रमा' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक स्वविवेक द्वारा भाव्य की अत्यधिक उन्नति करता है तथा ध्यावसाय में सफलता प्राप्त करता है। स्त्री-पक्ष से असान्ति मिलती है। ध्यावसाय-पक्ष में कुछ कठिनाइयों साथ विशेष लाभ भी होता है।

सातवीं मिन्द-दृष्टि से प्रथमधाव की देखने से शारीरिक प्रभाव तथा यज्ञ की बुद्धि होती है। कभी-कभी शोमारिद्यों तो आ घरेली हैं।

‘मकर’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमसंभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

अकरणः अस्तमधावः बुध

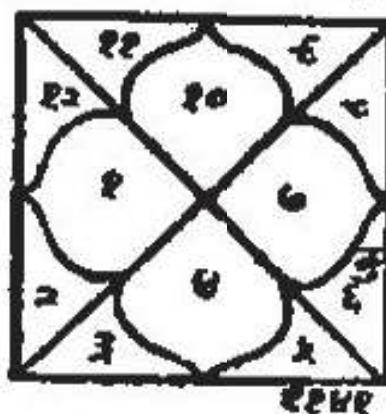


आठवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के अभाव से जातक की आयु में बृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का साथ होता है। भाष्योन्नति में बहुत बाधाएँ आती हैं तथा यश में भी कमी रहती है। शक्ति-पक्ष से भी अशान्ति मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव का देखने से  
कुछ कठिनाइयों के साथ धन तथा बुद्धि का सुख  
प्राप्त होता है तथापि दैनिक जीवन अभावपूर्ण बना  
रहता है ।

'मुकर' लूटन की कापड़ली के 'नवदमधार' स्थित 'सुष' का फलावेश

मुक्तरलङ्घनः नवमभावः ब्रूध

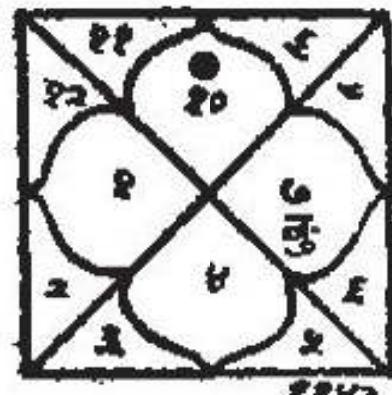


नवे भाव में स्वराशि स्थित उच्च के 'बुध' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। शनु-पक्ष पर सफलता प्राप्त होती है तथा इगड़ों से लाभ होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से तृतीय भाव की देखने के कारण भाइयों से विरोध कहता है तथा भाई-बहिन के बुध में कमी आती है। पराक्रम भी शिथिल बना रहता है।

‘अकर’ समूह की कृष्णली के ‘दशभजाव’ स्थित ‘बूध’ का फसादेश

## मुक्तरलग्नः दशभावः बुधः

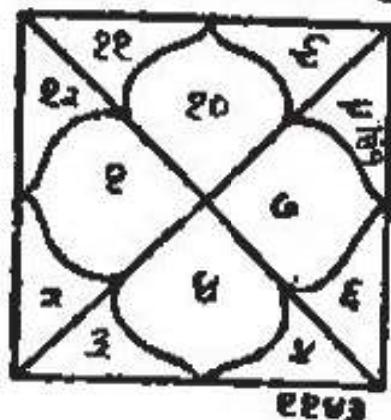


दसवें भाव में भिन्न 'कुक' की राशि पर स्थित 'वृद्ध' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ, प्रतिष्ठा, सहयोग तथा यश की प्राप्ति होती है। शनु-शक्ति पर विजय तथा घनोपार्जन में सफलता मिलती है।

सातवीं भिन्न-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से  
माता, भूमि एवं भवन का शुद्ध प्राप्त होता है, परन्तु  
उल्लति के यारे में रुकावटें भी आती रहती हैं।

## 'मकर' लग्न की कुण्डली के 'एकावशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : एकावशभाव : बुध

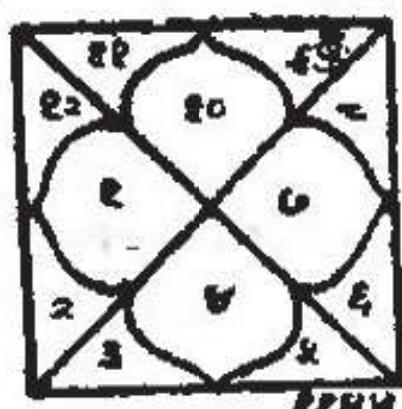


यारहवें भाव में मिल 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक बढ़ि होती है। तथा शक्ति-पक्ष में सफलता मिलती है। विवेक तथा परिश्रम द्वारा भाग्य की विशेष उन्नति होती है। स्वाधेयुक्त धर्म का पालन भी होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से पंचम भाव की देखने से सन्तान-पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ सफलता मिलती है, परन्तु विद्या-बुद्धि की विशेष उन्नति होती है।

## 'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

— मकरलग्न : द्वादशभाव : बुध



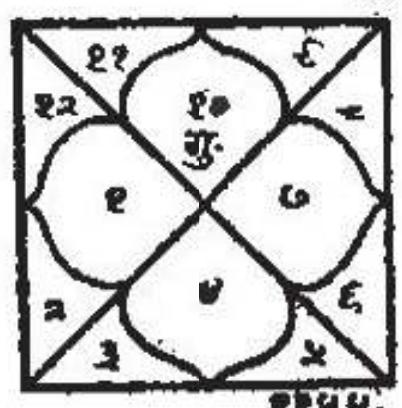
बारहवें भाव में मिल 'शुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु उसकी पूर्ति दिना किसी कठिनाई के होती रहती है। वाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। भाग्य-निति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा यश की कमी रहती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठ भाव की देखने से शक्ति-पक्ष से कुछ कठिनाई होती है, परन्तु भाग्य-बल से वह उन पर विजय भी पा सकता है।

## 'मकर' लग्न में 'शुरु'

### 'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अथमभाव' स्थित 'शुरु' का फलादेश

मकरलग्न : अथमभाव : बुध

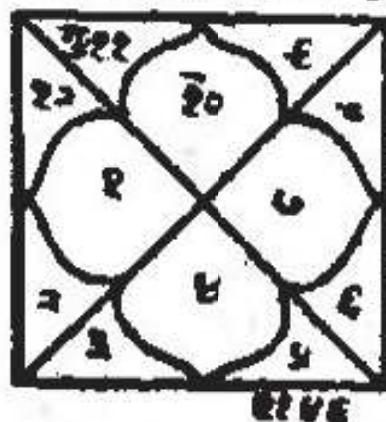


एहते भाव में शक्ति 'शनि' की राशि पर स्थित नीच के 'बुध' के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल रहता है। शाई-बहिन के सुख में कमी आती है एवं पराक्रम भी अल्प रहता है। खर्च चलाने में कठिनाई होती है तथा वाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी असंतोष-जनक रहता है। पाँचवीं शक्ति-दृष्टि से पंचम भाव की देखने से विद्या-बुद्धि के लेने में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है तथा सन्तान-पक्ष से सुख-दुःख दोनों ही मिलते हैं।

सातवीं उच्च-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। नवीं मिल-दृष्टि से नवम भाव की देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति में न्यूनाधिकता होती रहती है।

### ‘अकर’ लग्न की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलावेश

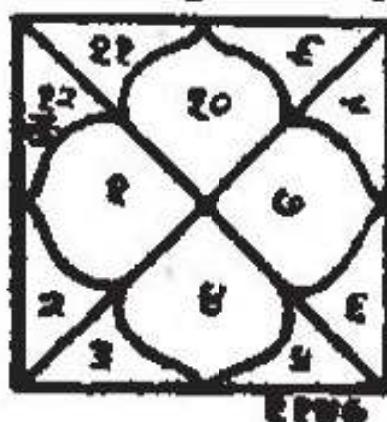
मकरलग्न : द्वितीयभाव : गुरु



नवीं शत्रु-दूषि॑ट से दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता एवं मिलती है।

### ‘अकर’ लग्न की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलावेश

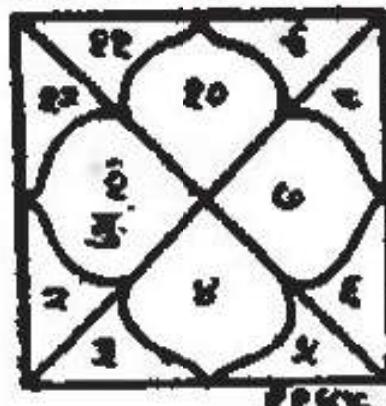
मकरलग्न : तृतीयभाव : गुरु



नवीं मित्र-दूषि॑ट से एकादशभाव की देखने से आमदनी बोल्छ रहती है। ऐसा अद्वितीय सुखी जीवन विताता है।

### ‘अकर’ लग्न की कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलावेश

मकरलग्न : चतुर्थभाव : गुरु



नवीं दूषि॑ट से स्वराशि॑ में द्वादश भाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से धर्मबंधे ही साथ प्राप्त होता है।

दूसरे भाव में शत्रु ‘शनि’ की राशि पर स्थित अद्वितीय गुरु के प्रभाव से जातक के धन-संप्रदाय में कमी आती है तथा कुटुम्ब से भी परेशानी रहती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से साथ होता है। पाँचवीं मित्र-दूषि॑ट से वर्षभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में बुद्धिमानी से काम निकलता है।

सातवीं मित्र-दूषि॑ट से अष्टम भाव को देखने से आगु तथा पुरातत्व का कुछ लाभ मिलता है।

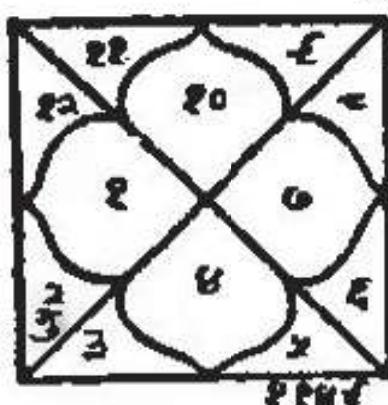
तीसरे भाव में स्वराशि॑-स्थित ‘गुरु’ के प्रभाव से जातक की आई-बहिनों का दुष्प्रभाव मिलता है, परन्तु पूर्वार्थी में कमी आती है। खर्च ठीक से चलता है। बाहरी स्थानों से लाभ होता है। पाँचवीं उच्च तथा मित्र-दूषि॑ट से सप्तम भाव को देखने से सुन्दर स्त्री मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता प्राप्त होती है। सातवीं मित्र-दूषि॑ट से सप्तम भाव की देखने से आग्य तथा धर्म के क्षेत्र में उत्तार-शब्दाव आते हैं।

चौथे भाव में मित्र ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘गुरु’ के प्रभाव से जातक को भासा, भूमि एवं भवन में दुष्प्रभाव में तथा आई-बहिन के दुष्प्रभाव में भी कुछ कमी रहती है। पाँचवीं मित्र-दूषि॑ट से अष्टम भाव की देखने से आगु एवं पुरातत्व का सामान्य लाभ होता है।

सातवीं शत्रु-दूषि॑ट से दशम भाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है।

### 'मकर' स्तन की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुह' का फलादेश

मकरलग्न : पंचमभाव : बुध



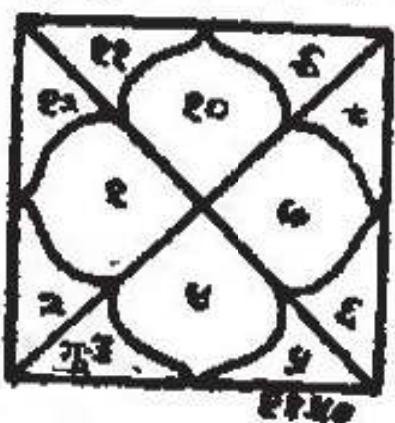
इश्वर

पाँचवें भाव में ज्ञान 'गुह' की राशि पर स्थित 'गुह' के प्रभाव से जातक को सन्तान-यज्ञ से न्यूनाधिक लाभ होता है तथा विद्या-बुद्धि के पक्ष में भी कुछ कमी रहती है। बुद्धि-बल से खर्च जलता है तथा बाहरी सम्बन्धों से साध होता है। भाई-बहिनों से सामान्य दुष्प्रिय मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

पाँचवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव की देखने से भाग्य एवं घर्मं की सामान्य वृद्धि होती है। सातवीं भाव-दृष्टि से आमदनी कम्ली रहती है। नवीं नीच-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है।

### 'मकर' स्तन की कुण्डली के 'षष्ठमभाव' स्थित 'गुह' का फलादेश

मकरलग्न : षष्ठमभाव : बुध



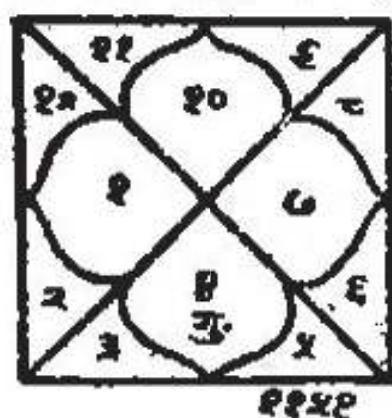
इश्वर

से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

नवीं शास्त्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से घन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि के लिए अस्थविक परिवर्त्य करने पर भी कष्ट ही मिलता है।

### 'मकर' स्तन की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुह' का फलादेश

मकरलग्न : सप्तमभाव : बुध



इश्वर

स्वास्थ्य में कमी आती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव की देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

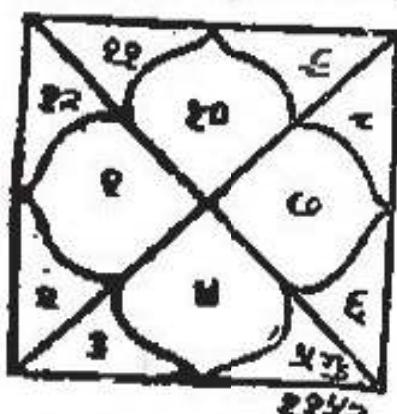
सातवीं भाव में मित्र 'बन्धमा' की राशि पर स्थित उक्त के 'गुह' के प्रभाव से जातक की सुन्दर पत्नी मिलती है तथा इनी और व्यवसाय से दुष्प्रिय प्राप्त होता है। बाहरी सम्बन्धों से लाभ मिलता है तथा खर्च अधिक रहता है।

पाँचवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव की देखने से आमदनी कम्ली रहती है। सातवीं नीच समाज-दृष्टि से प्रथम भाव की देखने से शरीरिक सौन्दर्य तथा

स्वास्थ्य में कमी आती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव की देखने से भाई-

**'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश**

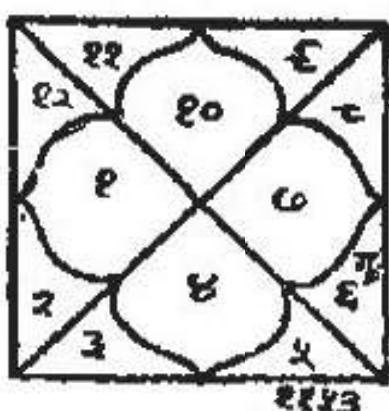
**मकरलग्न : अष्टमभाव : गुरु**



भवन के सूख में कुछ लूटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

**'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश**

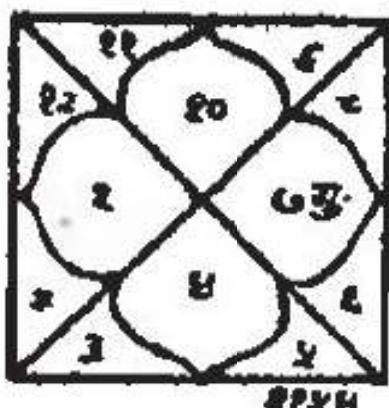
**मकरलग्न : नवमभाव : बुध**



होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से घट्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है।

**'मकर' लग्न को कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश**

**मकरलग्न : दशमभाव : गुरु**



माता के सूख में कमी रहती है, परन्तु भूमि तथा भवन का सूख खर्च के बत्त पर मिलता है। नवीं मित्र-दृष्टि से घट्ठ भाव की देखने से शत्रु-पक्ष पर बुद्धिमानी से उभाव स्थापित होता है।

आठवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'गुरु' से प्रभाव से जातक की आगु तथा गुरातत्त्व की कुछ हानि होती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक होता है तथा वाहरी सम्बन्धों से लाभ रहता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कृदृग्म के सूख में कमी रहती है। नवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव की देखने से माता, भूमि एवं अवन के सूख में कुछ लूटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

नवे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'बुध' में प्रभाव से जातक के आग्ने तथा धर्म के पक्ष में कमज़ोरी रहती है। वाहरी सम्बन्धों से कुछ लाभ होता है जिससे खर्च चलता रहता है। पाँचवीं नीच-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है। धन भी अशान्त रहता है।

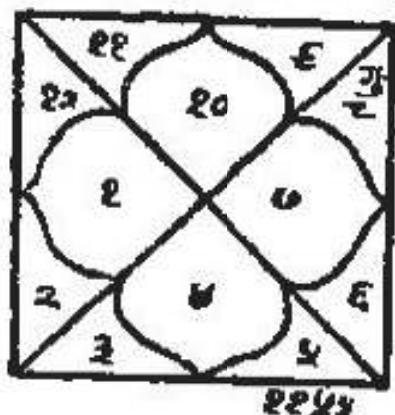
सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव की देखने से, भाई-बहिनों के सूख तथा पराक्रम में सामान्य वृद्धि होती है। जिसके कारण खर्च अच्छी तरह चलता है। वाहरी स्थानों से लाभ होता रहता है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-संचय तथा कीटुमिक सूख में कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव की देखने से शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के अन्त में कमी रहती है। भाई-बहिनों के सूख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है, जिसके कारण खर्च अच्छी तरह चलता है। वाहरी स्थानों से लाभ होता रहता है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-संचय तथा कीटुमिक सूख में कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव की देखने से माता के सूख में कमी रहती है, परन्तु भूमि तथा भवन का सूख खर्च के बत्त पर मिलता है। नवीं मित्र-दृष्टि से घट्ठ भाव की देखने से शत्रु-पक्ष पर बुद्धिमानी से उभाव स्थापित होता है।

'मकर' स्तर की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुह' का फलादेश

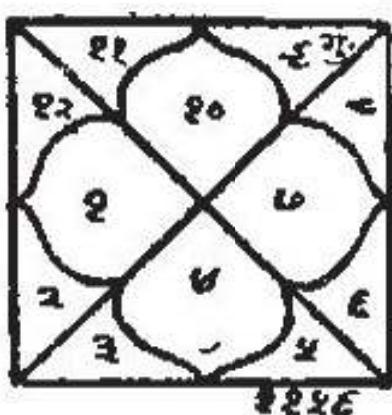
मकरलग्न : एकादशभाव : बुध



को देखने से स्त्री का सुख मिलता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुह' का फलादेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : बुध

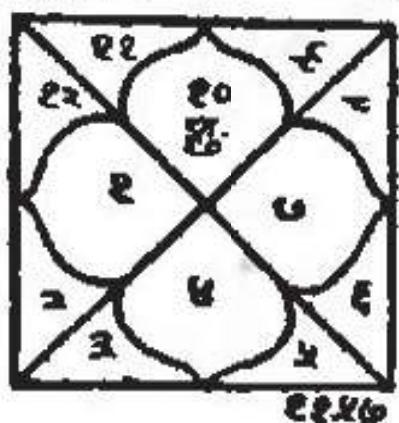


नवीं मित्र-दृष्टि से बष्टम भाव की देखने से आयु तथा पुरातत्व का लाभ कुछ कमी के साथ होता है। परन्तु ऐसा व्यक्ति शानदार खर्च करता तथा समाज में प्रभाव-शाली बना रहता है।

### 'मकर' लग्न में 'शुक्र'

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : प्रथमभाव : शुक्र



पहले भाव में मित्र जनि की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्रों में भी सफलता मिलती है। समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। सन्तान से सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि का अच्छ लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से पहली सुन्दर तथा योग्य मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ होता रहता है।

ग्यारहवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि

पर स्थित 'गुह' के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। वाहरी सम्बन्धों से भी लाभ होता है, अतः खर्च आराम से चलता है। पौजबीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से शाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में बृद्धि होती है।

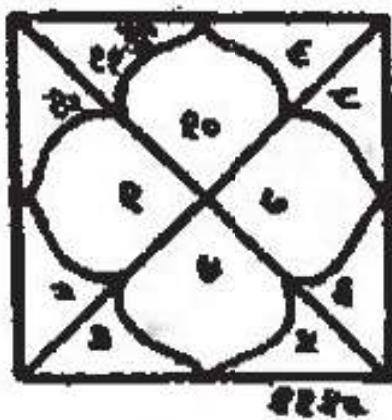
सातवीं शान्ति-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से मन्तान-पक्ष में असन्तोष रहता है, परन्तु विद्या-बुद्धि को बृद्धि होती है। नवीं उच्च-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सामान्य सुख मिलता है।

बारहवें भाव में स्वराशि-स्थित 'गुह' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु वाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ मिलता रहता है। शाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है। पौजबीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सामान्य सुख मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव की देखने से शान्ति-पक्ष पर युक्तिपूर्वक प्रभाव स्थापित होता है।

### 'मकर' लग्न की कुण्डली के 'हृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : हृतीयभाव : शुक्र



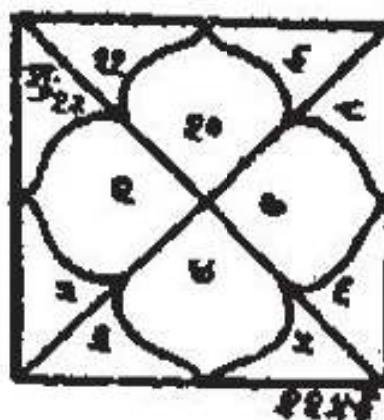
दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की घन तथा कृदृम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है। पिता, व्यवसाय तथा राज्य के क्षेत्रों से भी लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कठिनाई रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम भाव की देखने से आयु तथा पुरातत्व में कुछ कमी आती है।

ऐसा अक्षित घनी और यज्ञस्वी होता है परन्तु चिन्तित रहता है।

### 'मकर' लग्न की कुण्डली के 'हृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : हृतीयभाव : शुक्र

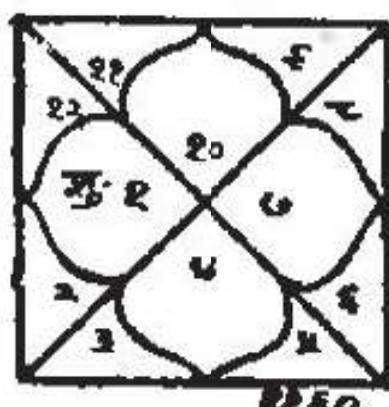


तीसरे भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष शृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। चिंह एवं संतान का लाभ होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं नीच-दृष्टि से नवम भाव की देखने से भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में कुछ कमी रहती है तथा यश भी कम मित्र पाता है।

### 'मकर' लग्न की कुण्डली से 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : चतुर्थभाव : शुक्र



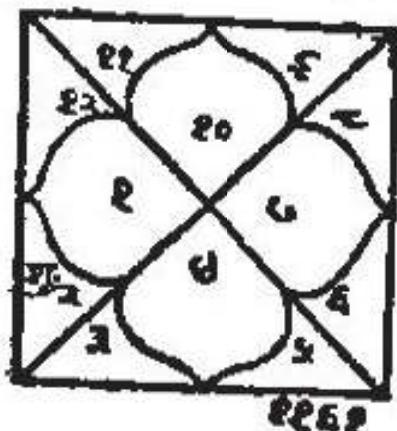
चौथे भाव में सामान्य मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। बुद्धि नीच से आमदनी भी अच्छी रहती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में दक्षम भाव की देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सफलता, यश, साम्राज्य तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

ऐसा अद्वितीय नीतिज्ञ, शीलवान, विचारकील दण्ड सुख-शान्तिपूर्वक जीवन अर्हतीत करने वाला होता है।

### 'अकर' सम्म की कुण्डली के 'वर्षमधाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्नः पञ्चमभावः शुक्र

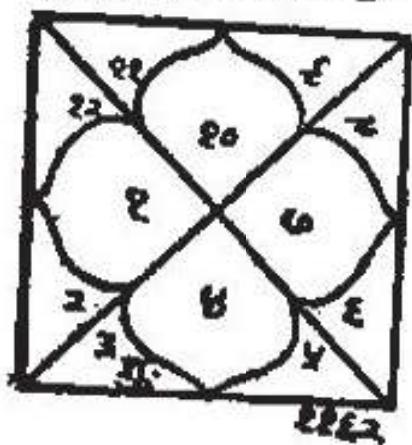


पाँचवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की सन्तान तथा विद्या-कुदि का धेष्ठ लाभ होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्रों में भी सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति प्रातः हुक्कूमस-पसन्द तथा कायदे-कानून जाता होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव की देखने से जातक की आमदनी धेष्ठ रहती है और वह निरन्तर उन्नति करता चला जाता।

### 'अकर' सम्म की कुण्डली के 'वर्षमधाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्नः षष्ठभावः शुक्र

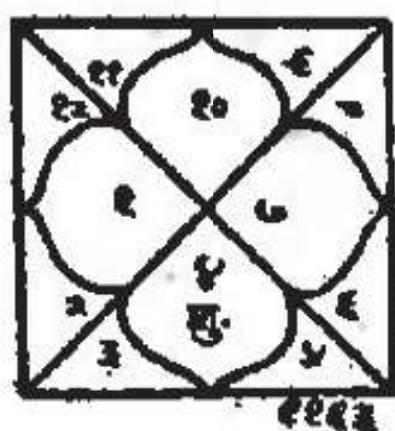


छठे भाव में मित्र 'कुध' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रखता है। पिता से कुछ गतज्ञेय के साथ ज्ञाति प्राप्त होती है तथा राज्य से सम्मान मिलता है किंतु सन्तान तथा विद्या-पक्ष दुर्बल रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव की देखने से उन्हें अधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ मिलता रहता है। ऐसा व्यक्ति दिमागी रूप से भी विनियत बना रहता है।

### 'अकर' सम्म की कुण्डली के 'सप्तममधाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्नः सप्तममधावः शुक्र

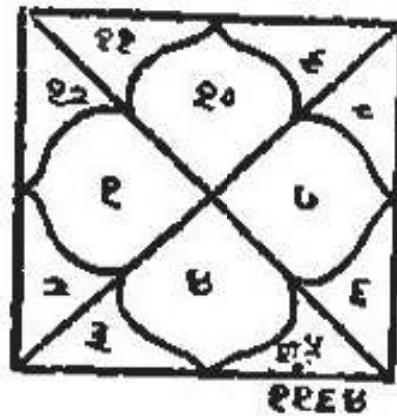


सातवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को सुन्दर तथा सुयोग्य स्त्री मिलती है। पिता, राज्य, व्यवसाय, सन्तान तथा विद्या पक्ष से भी सुख मिलता है। चरेलू जीवन आनन्दपूर्ण रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। राजकीय तथा सामाजिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा भी मिलती है।

### 'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्नः अष्टमभावः शुक्र

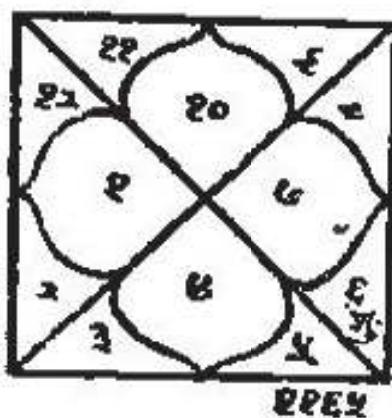


आठवें भाव में शनु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को पुरातत्व एवं आयु की शक्ति का लाभ होता है। पिता तथा सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है एवं राज्य तथा विद्या का क्षेत्र लुटिपूर्ण रहता है।

सातवीं मिन्दूष्टि से द्वितीयभाव की देखने से धन तथा कुटूम्ब का सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपने परिव्रम तथा गुप्त युक्तियों के यश पर उल्लिकरता है।

### 'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्नः नवमभावः शुक्र

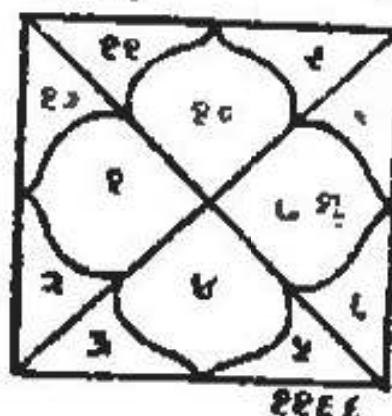


नवे भाव में मिन्दूष्टि 'बुध' की राशि पर स्थित नीज के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में बाधाएँ आती हैं। पिता, राज्य, व्यवसाय, सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में लुटिपूर्ण सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं उच्च तथा शनुदूष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से तरक्की करता है।

### 'मकर' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्नः दशमभावः शुक्र

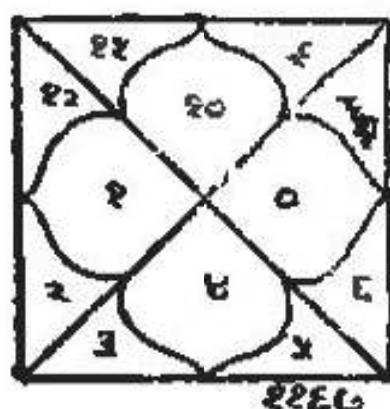


दसवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में व्यत्यधिक सहयोग, सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। सन्तान तथा विद्या-पक्ष भी प्रबल रहता है।

सातवीं शनुदूष्टि से चतुर्थ भाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख भी प्राप्त होता है तथा घरेलू जीवन उल्लासमय बना रहता है।

**'मकर' संग्रह की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश**

**मकर लग्न : एकादशभाव : शुक्र**

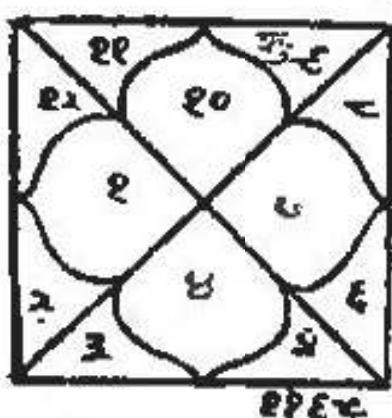


ज्यारहवें भाव में शत्रु 'झंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में स्थित पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का भी श्रेष्ठ लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी योग्यता के बल पर तरकी करता है।

**'मकर' संग्रह की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश**

**मकर लग्न : द्वादशभाव : शुक्र**



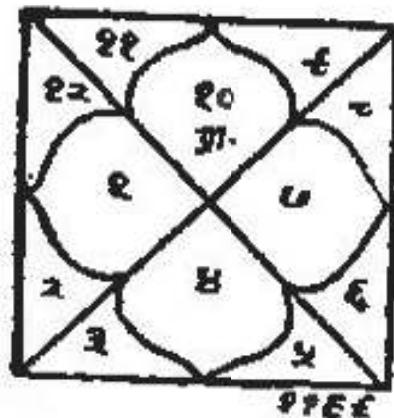
ज्यारहवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सर्वधं से लाभ प्राप्त होता रहता है। पिता पक्ष से हानि, सन्तान-पक्ष से कष्ट तथा विद्या-पक्ष में कमी रहती है। मानसिक चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

सातवीं मिन्द्रूष्टि से घट भाव की देखने से शत्रु-पक्ष में चतुराई से काम निकलता है। ऐसे व्यक्ति को उन्नति करने में कुछ विलम्ब लगता है।

### **'मकर' संग्रह में 'शनि'**

**'मकर' संग्रह की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश**

**मकर लग्न : प्रथमभाव : शनि**



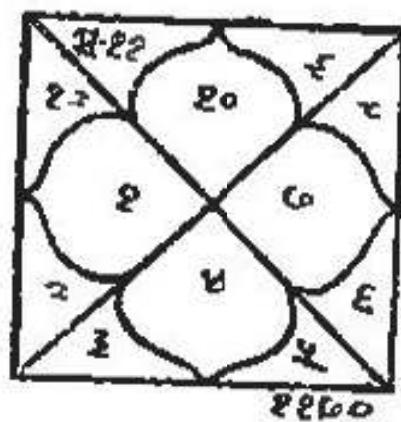
पहले भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। वह स्वामिमानी तथा यशस्वी भी होता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव की देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है, परन्तु आई-वहिनों से असन्तोष रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव की देखने से स्त्री से असन्तोष रहता है तथा व्यवसाय की वृद्धि के लिए प्रयत्न करता है। दसवीं उच्चवृद्धि से दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता,

सहयोग, यश तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

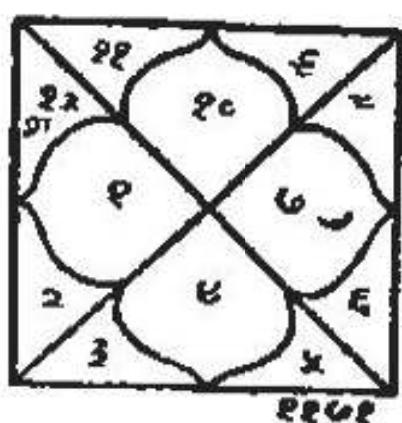
'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : द्वितीयभाव : शनि



'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

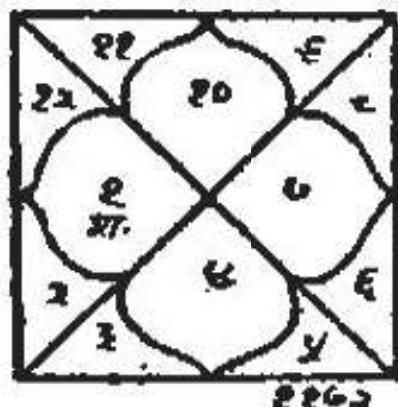
मकर लग्न : तृतीयभाव : शनि



द्वादश भाव को देखने से खचं अधिक रहता है तथा वाहरी स्थानों से कुछ कठिनाई के साथ लाभ मिलता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : चतुर्थभाव : शनि



झरीर सुन्दर होता है तथा आत्मबल की अधिकता पाई जाती है।

दूसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की धन-संचय एवं कौटुम्बिक सुख का यथेष्ट लाभ होता है। तीसरी नीच-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव की देखने से आयु तथा पुरातस्व की कुछ हानि होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव की देखने से कुछ कठिनाईों के साथ आमदनी में वृद्धि होती है।

तीसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाई के साथ भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। पुरुषार्थ के बल पर घन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। तीसरी मिन्द्रदृष्टि से पंचम भाव की देखने से अन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है।

सातवीं मिन्द्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खचं अधिक रहता है तथा वाहरी स्थानों से कुछ कठिनाई के साथ लाभ मिलता है।

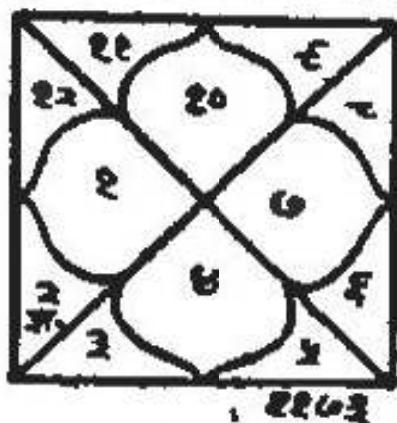
'मकर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

चौथे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के 'शनि' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। शारीरिक सौन्दर्य एवं धन-कुटुम्ब का सुख भी कम ही मिलता है। तीसरी मिन्द्रदृष्टि के षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा जगहों से लाभ होता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं धैर्यसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखने से झरीर सुन्दर होता है तथा आत्मबल की अधिकता पाई जाती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकरस्त्रन : पंचमभाव : शनि

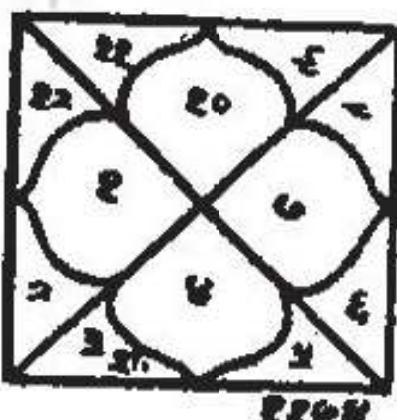


१२५३

आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से घन तथा कुटुम्ब के सुख में वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठिभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : षष्ठिभाव : शनि

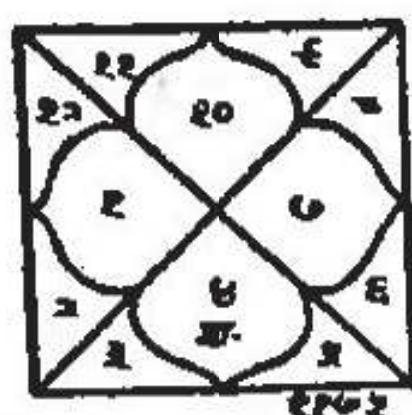


१२५४

रहता है तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध बनता है। दसवीं ज्ञानदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों से कुछ विमर्श रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकरस्त्रन : सप्तमभाव : शनि



१२५५

देखने से शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है। दसवीं नींघ तथा ज्ञानदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमितथा भवन के सुख में कमी रहती है।

पाँचवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की सन्तान, विद्या तथा बुद्धि का विशेष लाभ होता है। शारीरिक सौन्दर्य, बाणी तथा योग्यता की भी प्राप्ति होती है। तीसरी ज्ञानदृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री से कुछ असंतोष रहते हुए भी उसमें अधिक अनुरक्षित होती है तथा व्यवसाय-पक्ष में भी कुछ वृद्धिवृद्ध सफलता मिलती है।

सातवीं ज्ञानदृष्टि से एकादशभाव को देखने से

आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से घन तथा कुटुम्ब के सुख में वृद्धि होती है।

छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। ज्ञान-पक्ष पर प्रभाव बढ़ता है। कुटुम्ब से सामान्य विरोध रहता है तथा घन-संग्रह में कमी आती है।

तीसरी ज्ञानदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का अधिक लाभ नहीं होता।

सातवीं ज्ञानदृष्टि से हादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा ज्ञानदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों से कुछ विमर्श रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

सातवें भाव में ज्ञान 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से अकिञ्चित एवं आत्मीयता मिलती है तथा परिश्रम के हारा व्यवसाय में उन्नति होती है। घन तथा सन्तान का सुख भी मिलता है। तीसरी मित्रदृष्टि में नवम भाव को देखने से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है।

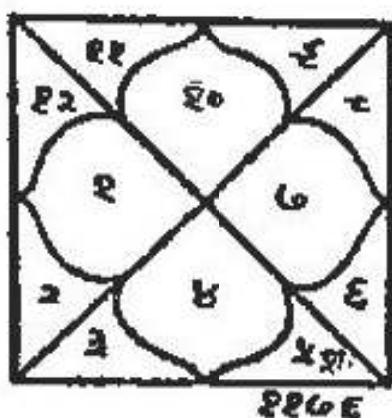
सातवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को

देखने से शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है तथा स्वाभिमान एवं प्रभाव का लाभ

होता है। दसवीं नींघ तथा ज्ञानदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमितथा भवन के सुख में कमी रहती है।

### 'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : अष्टमभाव : शनि

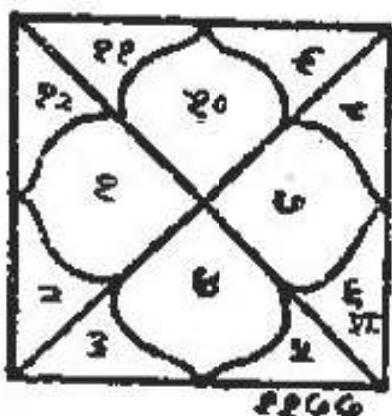


आठवें भाव में शनु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है तथा धन-कुटुम्ब की हानि पहुँचती है। तीसरी उच्चदृष्टि से दण्डभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब का अत्यं सुख मिलता है। दसवीं मिन्नदृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्नान-पक्ष की वृद्धि होती है।

### 'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : नवमभाव : शनि



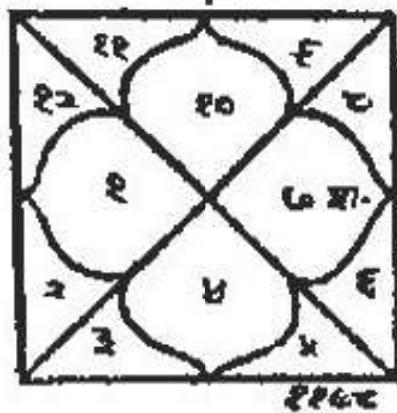
नवें भाव में मिन्न 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की पर्याप्त उन्नति होती है। शारीरिक प्रभाव, सम्मान तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। तीसरी शनुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से अमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं शनुदृष्टि से तृतीय भाव की देखने से भाई-बहिन के सुख में कमी आती है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

दसवीं मिन्नदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से धन एवं शारीरिक शक्ति के अल से शनु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा झगड़े के मामलों से लाभ होता है।

### 'मकर' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : दशमभाव : शनि

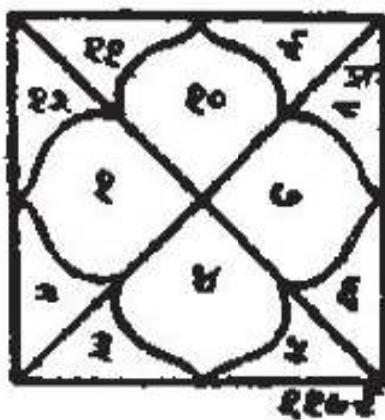


दसवें भाव में मिन्न 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'शनि' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सुख, सहयोग, सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी यथेष्ट मिलता है। तीसरी शनु-दृष्टि से द्वादश भाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से असन्तोष रहता है।

सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा मवन के सुख में कमी आती है। दसवीं शनुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-सुख में कुछ कमी तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ परेशानियाँ आती हैं।

### 'मकर' संग्रह की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलावेश

मकर लग्न : एकादशभाव : शनि



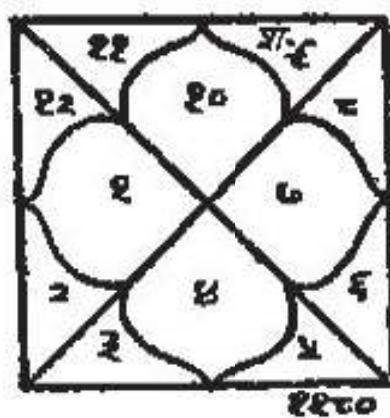
बारहवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। इन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, शश, प्रतिष्ठा, आत्मबल तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है।

सातवीं मिन्दूष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-वृद्धि के क्षेत्र में भी योग्य सफलता मिलती है। दसवीं शत्रुदूष्टि से अष्टम भाव को देखने से

आयु के विजय में चिन्ता रहती है तथा पुरातत्व शक्ति का लाभ होता है।

### 'मकर' संग्रह की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलावेश

मकर लग्न : द्वादशभाव : शनि



बारहवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा वाहरी स्थानों से लाभ होता है। इन, कुटुम्ब तथा शारीरिक स्वास्थ्य के सुख में कमी जाती है।

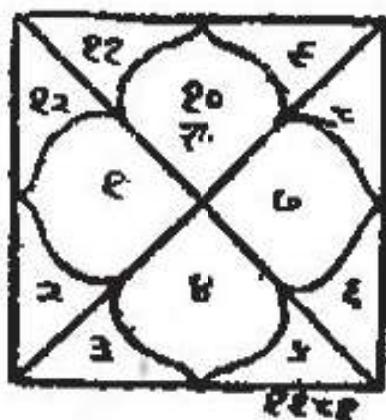
तीसरी दृष्टि से स्वराशि में 'द्वितीयभाव' की देखने से धन-प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयत्न करना पड़ता है। सातवीं मिन्दूष्टि से षष्ठ भाव की देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा जगहे के मामलों में विजय मिलती है।

दसवीं मिन्दूष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति भनी तथा आग्नेयान् होता है।

### 'मकर' लग्न में 'राहु'

#### 'मकर' संग्रह की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलावेश

मकर लग्न : प्रथमभाव : राहु

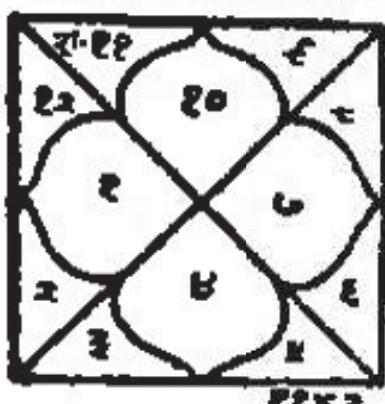


पहले भाव में मिन्दूष्टि 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी जाती है। कमी शरीर में ओट भी लगती है। कमी कोई विक्रेय रोग भी होता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, चतुर, सतकं तथा युक्ति-बल से बचने प्रभाव की वृद्धि करने माला होता है।

'मकर' स्तर की कुण्डली के 'द्वितीयमास' स्थित 'राहु' का फलादेश

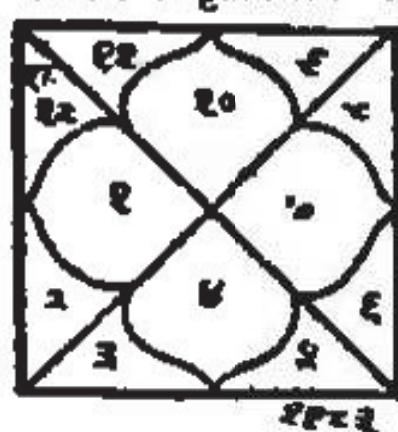
मकरलग्नः द्वितीयभावः राहु



दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक धन तथा कुटुम्ब के कारण चिन्तित रहता है तथा कष्ट भोगता है। कमी-कमी अ॒ण भी लेना पड़ता है। प्रकट रूप से वह अनी समझा जाता है, परन्तु यथार्थ में धन की कमी रहती है। बाद में गुप्त युक्तियों के बल पर वह अपनी व्याधिक स्थिति को सुदृढ़ भी बना लेता है।

'मकर' स्तर की कुण्डली के 'चतुर्थमास' स्थित 'राहु' का फलादेश

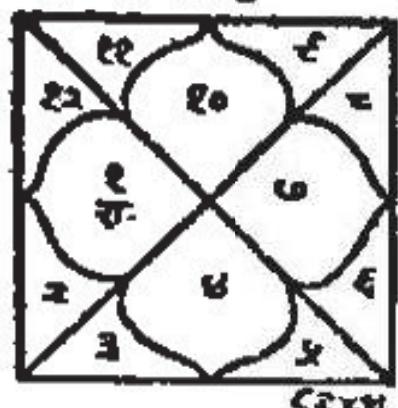
मकरस्तरः चतुर्थभावः राहु



तीसरे भाव में शत्रु 'गुह' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को आई-बहिनों की ओर से कष्ट मिलता है, परन्तु पराक्रम की व्यत्यधिक वृद्धि होती है। और से दुर्बलता अनुभव करने पर भी वह प्रकट रूप में बड़ा हिम्मती होता है तथा कठिनाइयों पर विजय पाता रहता है।

'मकर' स्तर की कुण्डली के 'चतुर्थमास' स्थित 'राहु' का फलादेश

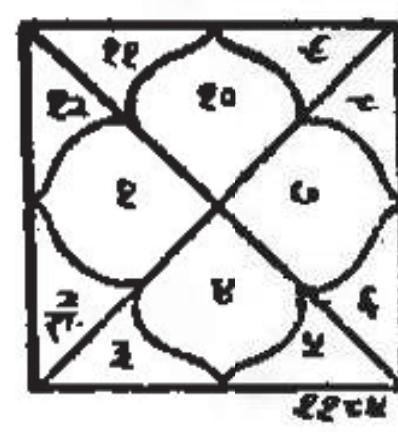
मकरलग्नः चतुर्थभावः राहु



चौथे भाव में शत्रु 'मगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को भाता, भूमि तथा अवन के सुख में कमी रहती है। कमी भातृभूमि का त्याग भी करना पड़ता है। अन्त में वह गुप्त युक्तियों के बल पर सुख तथा प्रभाव की वृद्धि करता है। ऐसा व्यक्ति हिम्मतों तथा उम्मीदों की दौड़ी तौर होता है।

'मकर' स्तर की कुण्डली के 'पंचममास' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरस्तरः पंचमभावः राहु

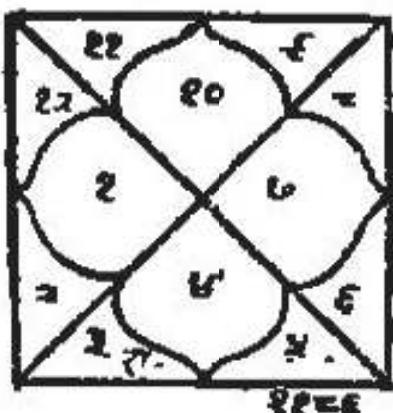


पाँचवें भाव में मित्र 'मुकु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को सन्तान-यक्ष से कष्ट होता है तथा विद्या ग्रहण करने में भी कठिनाई आती है। परन्तु उसकी वृद्धि बड़ी तौर होती है।

वह होशियार तथा गुप्त युक्तियों में प्रबोध होता है। अन्त में, सन्तान तथा विद्या दोनों ही लेखों में सफलता भी था लेता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'व्यष्टिभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न : व्यष्टिभाव : राहु

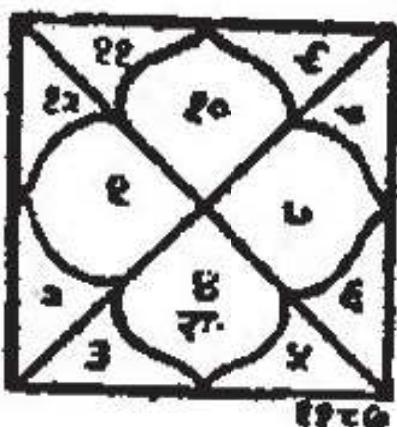


छठे भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना विजेता प्रभाव रखता है तथा इगड़ों के मामलों में सफलता प्राप्त करता है।

वह कूटनीतिश, विवेकी, सीध-चुदि तथा युप्त युक्तियों का जानकार होता है। ऐसा अस्ति प्रायः कभी बीमार नहीं होता।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'व्यष्टिभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

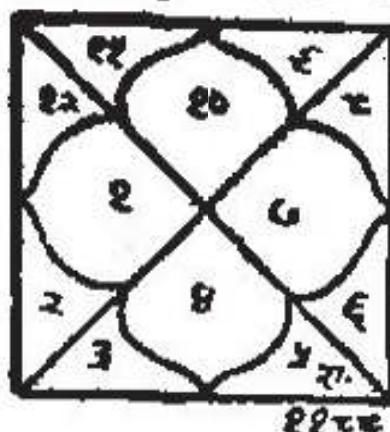
मकरलग्न : सप्तमभाव : राहु



सातवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से भ्रान् कष्ट होता है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ जाती रहती हैं। उसकी मूलेन्द्रिय में रोग भी होता है। वह अपनी युप्त युक्तियों के बल से कठिनाइयों पर कुछ विजय भी पा लेता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

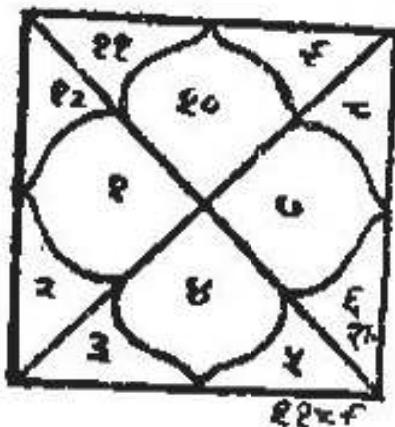
मकरलग्न : अष्टमभाव : राहु



आठवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के जीवन पर बड़े संकट आते हैं तथा कभी-कभी मूल्य-तुल्य कष्ट भी भोगना पड़ता है। पुरातत्व की हानि भी होती है। उदर व्यवसा गुदा-सम्बन्धी रोगों का शिकार बनना पड़ता है। वह अपनी युप्त युक्तियों के बल पर जैसे-तैसे जीवन-शापन करता है।

## ‘मकर’ संग्रह की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलाबेश

मकरलग्न : नवमभाव : राहु

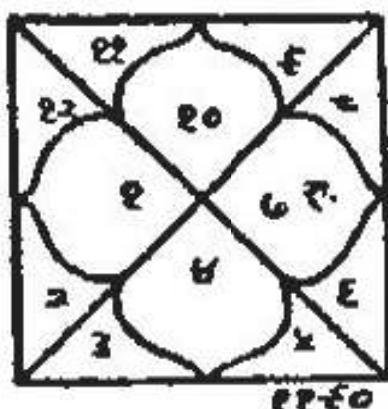


नवें भाव में मित्र ‘बुध’ की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में निरन्तर बाधाएँ आती रहती हैं। कभी-कभी विशेष कठिनाइयों का शिकार भी बनता है। धर्म-पालन में भी कमी रहती है।

कठिन संघर्ष, परिश्रम तथा युपत् युक्तियों के बल पर वह शोष्णी-वहुत उन्नति भी कर सकता है।

## ‘मकर’ संग्रह की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलाबेश

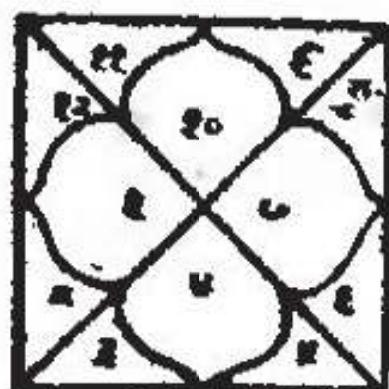
मकरलग्न : दशमभाव : राहु



दसवें भाव में मित्र ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य संपा व्यवसाय के क्षेत्र में विघ्नों वाधाओं का सामना करना पड़ता है। परन्तु वह अपनी युपत् युक्तियों के बल पर उन्हें दूर करता हुआ आगे की उन्नत बनाता है। यद्यपि उसे अनेक बार संकटों में घिर जाना पड़ता है।

## ‘मकर’ संग्रह की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलाबेश

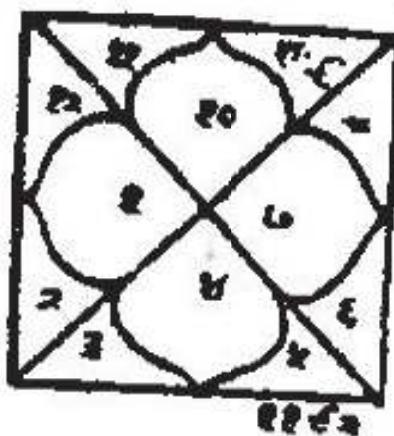
मकरलग्न : एकादशभाव : राहु



यारहवें भाव में शत्रु ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम तथा युपत् युक्ति-बल द्वारा विशेष साम प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे बड़ी हानि भी उठानी पड़ती है तो कभी विशेष साम भी होता है। उसके जीवन में सुख-दुःख आते-आते बने रहते हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : राहु



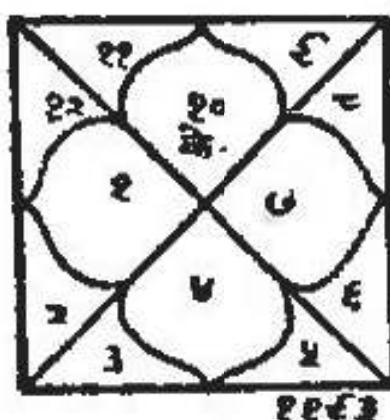
बारहवें भाव में जन्म 'गुरु' की राशि पर स्थित नींध के 'राहु' के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी कष्ट उठाने पड़ते हैं।

हिम्मती होने के कारण वह अपनी कठिनाइयों की प्रकट नहीं होने देता तथा उन्हें दूर करने की विशेष परिश्रम करता रहता है।

### 'मकर' लग्न में 'केतु'

'मकर' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : प्रथमभाव : केतु

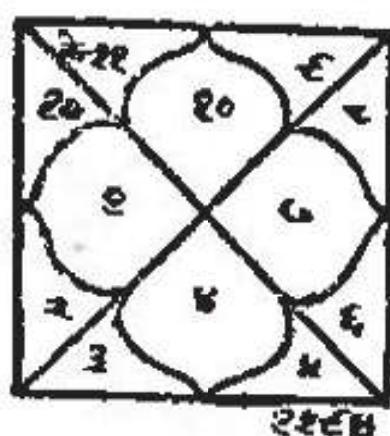


पहले भाव में विद्या 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा कभी कोई बड़ी चोट लगाने की संभावना भी रहती है।

ऐसा अविकृत उप तथा जिद्दी स्वभाव का होता है तथा अपने प्रभाव की बढ़ाने के लिए युप्त युक्तियों का आश्रय भी लेता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

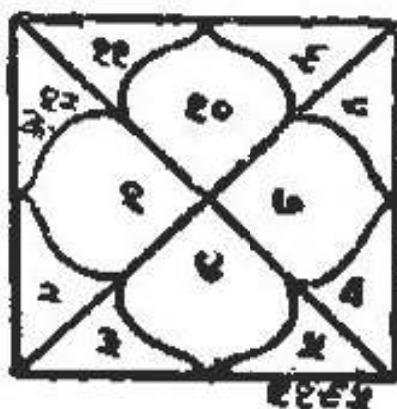
मकरलग्न : द्वितीयभाव : केतु



दूसरे भाव में विद्या 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को ज्ञन तथा कुटुम्ब के विषय में बड़े संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह हिम्मत तथा युप्त युक्तियों का आश्रय लेकर ज्ञन-सम्बन्धी कभी को पूरा करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

**‘मकर’ सन्न की कुण्डली के ‘सूतोयमाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश**

**मकरलग्नः सूतोयमावः केतु**

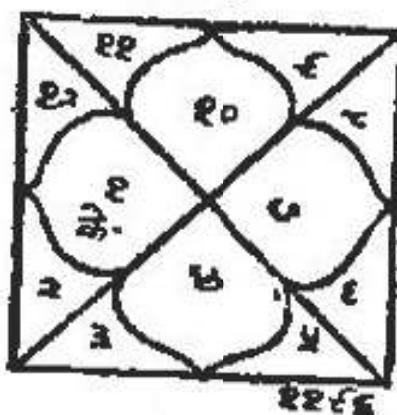


तीसरे भाव में शत्रु ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों के पक्ष में परेशानी तथा संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु पराक्रम की अत्यधिक बुद्धि होती है।

वह साहस, सैर्व, मुरुखार्थ तथा गुप्त युक्तियों के बल पर जीवन को प्रभावसाली बनाये रखने का प्रयत्न करता रहता है।

**‘मकर’ सन्न की कुण्डली के ‘चतुर्थमाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश**

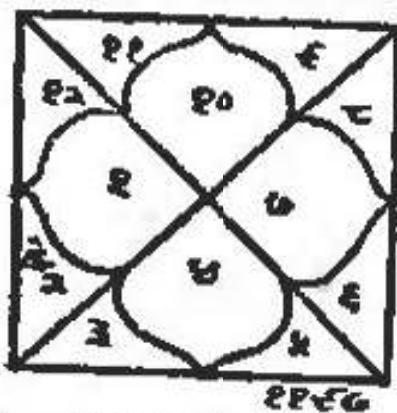
**मकरलग्नः चतुर्थमावः केतु**



चौथे भाव में शत्रु ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक की माता के सुख में कमी तथा माता के कारण ही कष्ट भी प्राप्त होता है। घरेलू जीवन कलहपूर्ण रहता है। मातृ-भूमि का स्वयाग भी करना पड़ता है। अन्त में, कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर उसे सुख के साधन प्राप्त करने में शोर्दी-शहूत सफलता मिल जाती है।

**‘मकर’ सन्न की कुण्डली के ‘पंचममाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश**

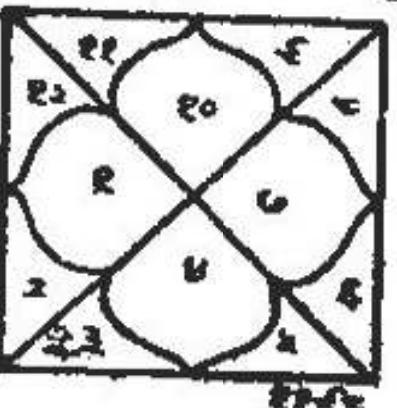
**मकरलग्नः पंचममावः केतु**



पाँचवें भाव में मिथि ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक की सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में भी का शिकार होना पड़ता है। भस्त्रज्ञ में गुप्त चिन्ताओं का निवास रहता है। परन्तु उसकी बुद्धि तीव्र होती है, अतः वह चतुराई से काम लेकर अपनी कठिनाइयों के निवारण का प्रयत्न करता है।

**‘मकर’ सन्न की कुण्डली के ‘षष्ठमाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश**

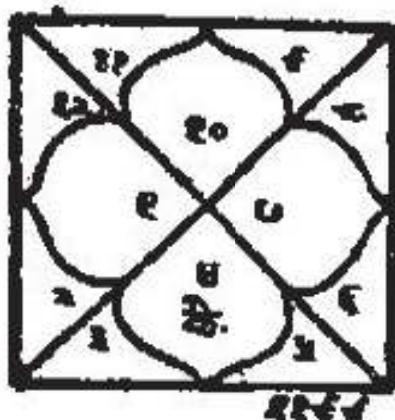
**मकरलग्नः षष्ठमावः केतु**



छठे भाव में विद्य ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक की शासुओं के कारण कठिनाइयों में फँसना पड़ता है, परन्तु अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर वह उन पर विजय भी पा लेता है। झगड़-संघट के मामलों में उसे सफलता मिलती है। ननसाल-पक्ष की हानि पहुँचती है। और संकट आने पर भी वह अपना सैर्व नहीं छोड़ता है।

‘भक्त’ सम्बन्धी के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

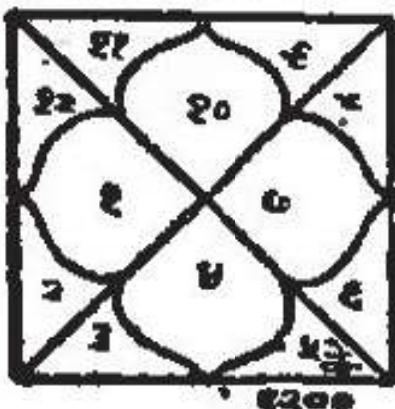
मकरलग्न : सप्तमभाव : केतु



सातवें भाव में शान्ति ‘चन्द्रमा’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से अनेक प्रकार के कष्ट प्राप्त होते हैं। गृहस्थ-जीवन में परेशानियाँ आती हैं। अनेक प्रकार के व्यवसाय करने पर भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं। अन्त, में वह अपनी गुप्त युक्तियों तथा कठोर परिषम के द्वारा उन पर यथोचित सफलता भी पा लेता है।

‘भक्त’ सम्बन्धी के कुम्हलग्नी के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

मकरलग्न : अष्टमभाव : केतु

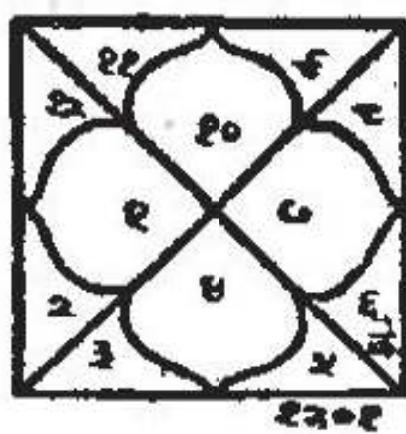


बाठवें भाव में शान्ति ‘सूर्य’ की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के जीवन पर अनेक बार संकट आते हैं और वह मृत्यु-तृतीय कष्ट पाता है। वेट में विकार रहता है।

अजीविका-उपार्जन के लिए कठिन परिषम करना पड़ता है। भीतर से चिन्तित रहते हुए भी शक्ति में वह प्रभाव प्रदर्शित करता है। प्रायः उसका जीवन संपर्यंपूर्ण रहता है।

‘भक्त’ सम्बन्धी के कुम्हलग्नी के ‘नवमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

मकरलग्न : नवमभाव : केतु



नवें भाव में मित्र ‘वृष्टि’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक की आध्योत्त्वति में कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु वह अपनी हित्यत, परिषम तथा गुप्त युक्तियों के द्वारा उन पर विजय पाकर आग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन करता है। कमी-कमी उसे आग्य-ओति में घोर संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु अन्त में उनका निराकरण करने में सफल हो जाता है।



## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server



## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

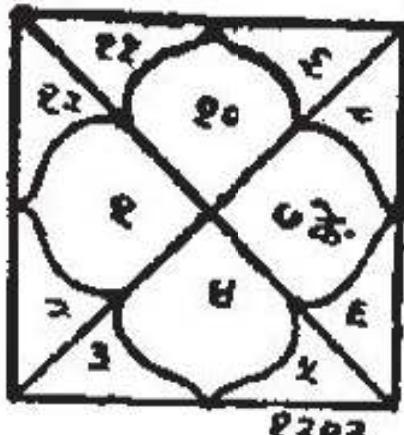
FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server!

‘मकर’ सन्म की कुण्डली के ‘दशभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

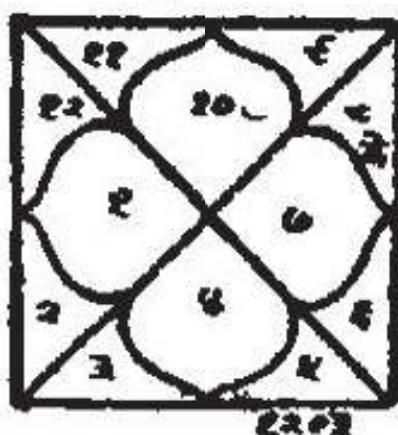
मुकरलग्न : दशभाव : केतु



दसवें भाव में मिल ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक को पिता से कष्ट, राज्य से कठिनाइयाँ तथा व्यवसाय-क्षेत्र में संकटों का शिकार बनना पड़ता है, परन्तु अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर वह उन पर विजय पा लेता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन संघर्षपूर्ण तथा परिवर्तनशील होता है।

‘मकर’ सन्म की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

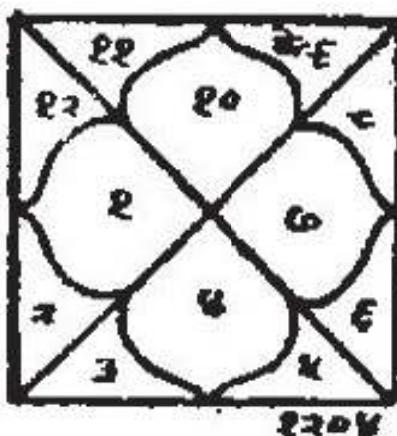
मुकरलग्न : एकादशभाव : केतु



ग्यारहवें भाव में शुक्र ‘बंगल’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक घृणा होती है। वह अपनी गुप्त युक्तियों, साहस एवं कठिन परिश्रम के बल पर आमदनी की निरन्तर बढ़ाता रहता है। अपने बाली कठिनाइयों पर उसे विजय मिलती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त रूप में चिन्तित भी बना रहता है।

‘मकर’ सन्म की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

मुकरलग्न : द्वादशभाव : केतु



बारहवें भाव में शुक्र ‘भुरु’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक का खंड अत्यधिक रहता है, परन्तु वाहरी स्थानों से उसे लाभ मिलता है।

ऐसा व्यक्ति कठिनाइयों का साहस के साथ सामना करता है तथा अन्त में उन पर विजय भी पा लेता है। वह बड़ा परिश्रमी, धैर्यवान्, गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला तथा साहसी होता है।